R.N.I. No. 2321/57
जनवरी 2020

ओ३म्

रजि. सं. MTR नं. 004/2019-21
अंक 12

तपोभूमि

मासिक

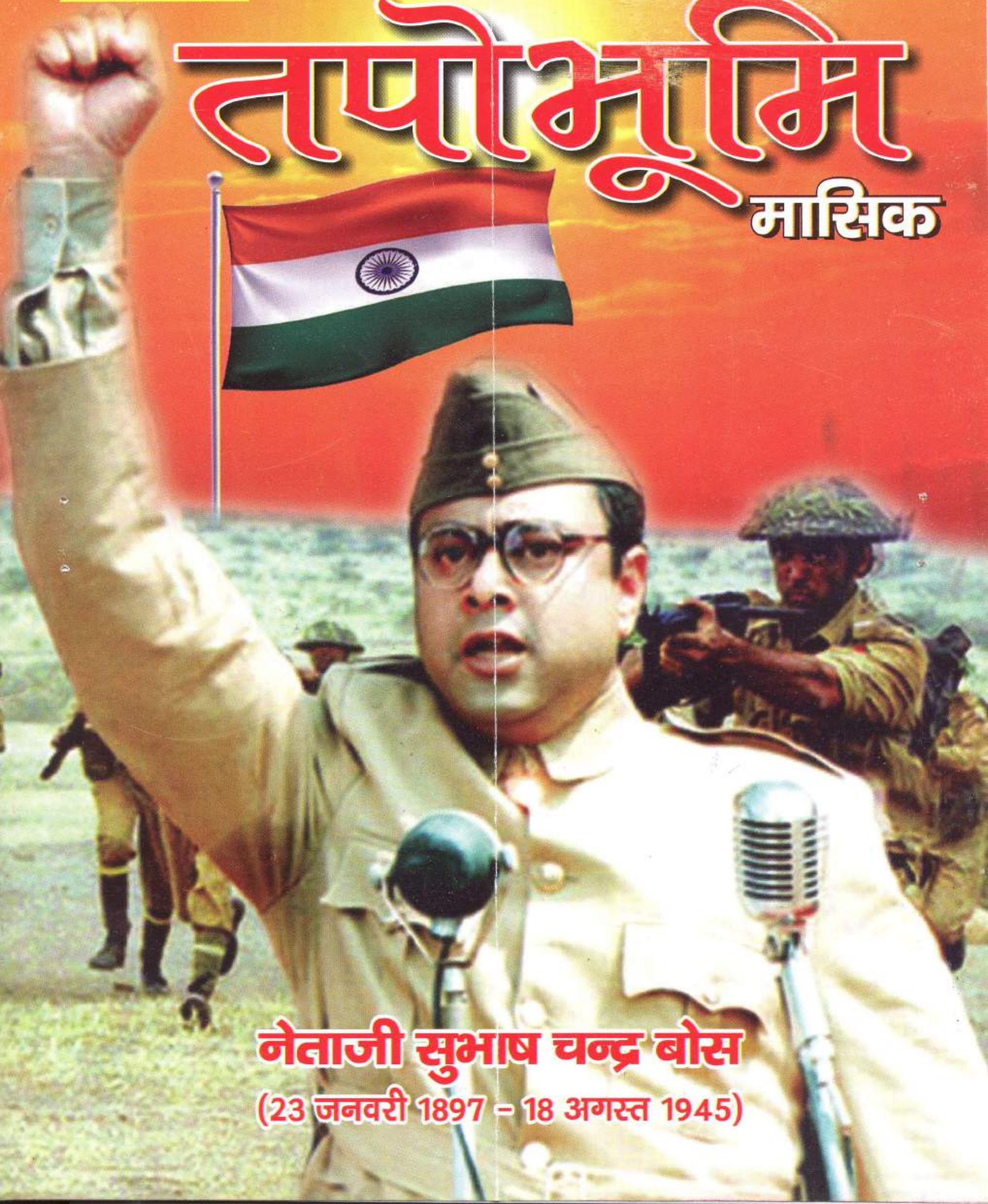

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

(23 जनवरी 1897 - 18 अगस्त 1945)

आर्ष गुरुकुल वेदमन्दिर–मथुरा में 15 वां चतुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

विगत 15 वर्षों से निरन्तर चल रहा चतुर्वेद पारायण यज्ञ 6 दिसम्बर से लेकर 25 दिसम्बर 2019 तक चला। इस अवसर पर यज्ञ दोनों सत्रों में प्रातः 9 बजे से लेकर 12 बजे तक और अपरान्ह 2 बजे से 5 बजे तक चलता रहा। प्रतिदिन भजन प्रवचन भी होते रहे। यज्ञशील श्रद्धालुओं ने पूर्णनिष्ठा के साथ यज्ञ में सहभागिता की प्रमुख यज्ञमानों में श्रीकृष्णवीर जी शर्मा फरीदाबाद, प्रवीण शर्मा फरीदाबाद, लक्ष्मणसिंह जी फरीदाबाद, मेजर धर्मेन्द्रनाथ सक्सैना मथुरा, चौधरी राजेश जी बाजना, श्री विनोदकुमार डेरी वाले बाजना, मोतीलाल सेठ बाजना, ऊधमसिंह बाजना, सत्यवीरसिंह मंडी सचिव (आगरा), भानुप्रताप मलिक खुशीपुरा, योगेश यादव बझेरा, योगेश यादव सदर बाजार मथुरा, श्री रघुनाथसिंह एडवोकेट माधुरीकुण्ड (मथुरा), श्री शिवदीप जी अडींग (मथुरा), श्री भानुप्रताप यादव भरतपुर, श्री घनश्याम बगरू (जयपुर) श्री सुखवीर नोएडा, अतुल यादव बरारी, रघुवीरसिंह बलरई, अनूपसिंह बलरई, दयाशंकर जी आर्य सम्भल, अवधेश गुप्ता सौरिख (कन्नौज), बहिन रामकुमारी औरैया, रविप्रकाश फरसैया (सिरसागंज), दिलीप यादव एम. एल. सी. (शिकोहाबाद), शिवनन्दन यादव एटा, बहिन रजनी यादव शिकोहाबाद, श्री ओमशरण जी आर्य शिकोहाबाद, पी. एस. राणा शिकोहाबाद,पूर्व प्राचार्य अजयकृष्ण चौहान शिकोहाबाद, सत्यप्रिय आर्य ऊँचागाँव (हाथरस), बहिन बीना यति हाथरस, राकेश यादव नगलाकेसिया, अशोक यादव नगलाकेसिया (अलीगढ़), राजेशकुमार सोनी फरह, डॉ0 अमरसिंह पौनिया कोसी (मथुरा), डॉ0 अमरचन्द्र अकबरपुर (मथुरा), पूर्व चेयरमैन वीरेन्द्र अग्रवाल, महेशचन्द्र आर्य, डॉ0 प्रवीणकुमार अग्रवाल, दिनेशचन्द्र कसेरे, श्री आनन्दस्वरूप केलाजी आनन्दधाम–वृन्दावन, श्री एस. के. शर्मा प्रमुख समाजसेवी, चौधरी सरदारसिंह पूर्वमंत्री भारत सरकार मथुरा, रामेश्वर सैनी गुहाना जींद (हरियाणा), राकेशकुमार वकील अलीगढ़, भूदेव जी शर्मा अलीगढ़, योगेशव यादव हरदुआगंज, योगेश शर्मा मथुरा, उदयपाल आर्य कन्नौज, डॉ0 सत्यप्रिय जी मथुरा, ब्रजकिशोर जी माधुरीकुण्ड (मथुरा), वेदप्रकाश जी हरदुआगंज, विनोद खण्डेलवाल कृष्णानगर, रामबिहारी आर्य टैंटीगांव, राजेश वकील चौकीपुरा, राजवीर वैद्य खानपुर, पूरनसिंह मथुरा आदि यजमानों ने उत्साह सहित यज्ञ में सहभागिता की। इस अवसर पर विभिन्न जनपदों व प्रान्तों से भी आर्य जनता ने भारी उत्साह के साथ कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया जिनमें आगरा, अलीगढ़, हाथरस, एटा, फर्रूखाबाद, हरदोई, कन्नौज, इटावा, औरैया, कानपुर, बनारस, भिण्ड, मुरैना, ग्वालियर, भरतपुर, धौलपुर, जयपुर, अलवर, नारनौल, महेन्द्रगढ़, जींद, रोहतक, दिल्ली, भटिण्डा, कैथल, करनाल, सोनीपत, फरीदाबाद, पलवल, गुरुग्राम, ग्रेटर नौएडा, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हापुड़, बिजनौर, सम्भल, मुरादाबाद, बरेली, सीतापुर, कासगंज, बुलन्दशहर, जे. पी. नगर इत्यादि स्थानों से लोग निजी वाहनों से व बसों आदि को लेकर उत्साह सहित यज्ञ की पूर्ण आहुति में सहभागिता की।

–(शेष पृष्ठ संख्या 35 पर)

तपोभूमि

ओ३म् वयं जयेम (ऋक्0)

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कल्याण की साधिका

(आर्य जगत में सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक)

वर्ष–65 संवत्सर 2076 जनवरी 2020 अंक 12

संस्थापक
स्व0 आचार्य प्रेमभिक्षु

संपादक:
आचार्य स्वदेश
मोबा. 9456811519

जनवरी 2020

सृष्टि संवत्
1960853120

दयानन्दाब्द: 195

प्रकाशक
सत्य प्रकाशन
आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग
मसानी चौराहा, मथुरा (उ0 प्र0)
पिन कोड–281003

दूरभाष:
0565–2406431
मोबा0 9759804182

अनुक्रमणिका

लेख–कविता		पृष्ठ संख्या
वेदवाणी	–डॉ0 रामनाथ वेदालंकार	4–5
उद्देश्य और कार्य–प्रणाली में मौलिकता	–पं0 माधवराव	6–9
स्वास्थ्य चर्चा	–	10
ईश्वर का वैदिक स्वरूप और गो0 तुलसीदास	–रामस्वरूप आर्य	11
पशुओं के रोग, उनके लक्षण और चिकित्सा	–	12–15
योग चिकित्सा का मूल तत्त्व	–पं. अत्रिदेव गुप्त भिषग्रत्न	16–17
विज्ञान, दर्शन और धर्म	–	18–19
आर्यसमाज क्या है?	–	20
गुलदस्ता– विचार सुमन	–महेन्द्रपाल आर्य	21–22
कुछ मुख्य क्रान्तिकारियों का संक्षिप्त परिचय	–खुशहालचन्द्र आर्य	23–26
शुद्ध ज्ञान–हमारा सच्चा पथप्रदर्शक	–आचार्य प्रद्युम्न	27–29
विचार आखिर विचार ही है	–बलवीरसिंह रंग	30
प्रतीक के दर्शन	–पं0 चमूपति एम. ए.	31–32
भारत माँ के लाल	–उमाधर मिश्र	33

❁❁❁

वार्षिक शुल्क 150/– पन्द्रह वर्ष के लिये शुल्क 1500/– रूपये

वेदवाणी

लेखकः डॉ० रामनाथ वेदालंकार

पीलिया ज्वर पर वज्रपात करें

अयं यो अभिशोचयिष्णुर्विश्वा रूपाणि हरिता कृणोषि।
तस्मै तेऽरुणाय बभ्रवे नमः कृणोमि वन्याय तक्मने।।

–अथर्व0 6। 20। 3

शब्दार्थ:–

हे पीलिया ज्वर! (अयम्) यह (अभिशोचयिष्णु:) शरीर में चारों ओर गर्मी या जलन पैदा करने वाला (य:) जो तू (विश्वा रूपाणि) सब रूपों को (हरिता कृणोषि) पीला कर देता है, (तस्मै) उस (अरुणाय बभ्रवे) लाल, भूरे, (वन्याय) वन में उत्पन्न होनेवाले (तक्मने ते) तुझ ज्वर की (नमः कृणोमि) चिकित्सा करता हूँ, तुझ पर वज्रपात करता हूँ।

भावार्थ:–

ज्वर कई प्रकार के होते हैं, कोई तीसरे दिन चढ़ता है, कोई चौथे दिन, कोई दूसरे दिन, कोई प्रतिदिन चढ़ता है। कोई श्लेष्म–ज्वर होता है, कोई विषमज्वर, कोई अन्य किसी कष्ट के साथ आता है। इन्हीं में एक पीलिया ज्वर भी है। इससे आँखें विशेष प्रभावित होती हैं आँखों में और शरीर की त्वचा में पीलापन आ जाता है। सब वस्तुएँ भी पीली दीखने लगती हैं। कब्ज हो जाती हैं, भूख मारी जाती है, कभी चक्कर भी आते हैं, मिचलाहट या वमन भी होते हैं। पीलिया किस स्थिति तक पहुँच चुका है, लक्षण इस पर निर्भर करते हैं। इसमें घी–दूध–मेवा आदि पौष्टिक पदार्थों को खाने की न इच्छा करती है, न ही शरीर को इनकी आवश्यकता रहती है। चिकित्सक लोग हल्का भोजन बताते हैं, मूली, पपीता, हरी सब्जियाँ, साबूदाना, नींबू, रसदार फल आदि पथ्य का परामर्श देते हैं। हल्दी का सेवन मना करते हैं। भारी व्यायाम न करके साधारण भ्रमण करने की प्रेरणा करते हैं। चिकित्सकों के उक्त परामर्शों का पालन करते हुए आयुर्वेद, ऐलोपैथी, होम्योपैथी, प्राकृतिक चिकित्सा जो अनुकूल पड़ती हो वह करनी चाहिए।

मन्त्र में कहा गया है कि पीलिया ज्वर 'अभिशोचयिष्णु' है, अर्थात् शरीर में गर्मी या जलन पैदा करता है। बाहर के सब रूपों को तथा शरीर के नेत्र, त्वचा आदि अवयवों को भी पीला दर्शाता है। नासिकामल, कफ, मूत्र आदि भी पीले हो जाते हैं। यह वन में अर्थात् जहाँ वृक्ष–वनस्पति अधिक होते हैं तथा सीलन होती है, वहाँ अधिक पाया जाता है। इसे 'नम:' किया गया है। वेद में 'नम:' के अन्न, वज्र

और नमन अर्थ होते हैं। पीलिया ज्वर को नष्ट करने के लिए उस पर औषधरूप वज्रपात करें, यह अभिप्राय है। इस ज्वर को अरुण और बभ्रु भी कहा गया है, क्योंकि यह कभी-कभी शरीर को अरुण या भूरा भी कर देता है। मन्त्र में रोग दूर करने के लिए चिकित्सक की तथा रोगी की उग्रभावना भी प्रकट होती है। ❁

तपोभूमि मासिक के पाठकों से विनम्र निवेदन

'तपोभूमि' मासिक पत्रिका प्रतिमाह आप तक पहुँच रही है। हमारा हर सम्भव प्रयास यही रहता है कि पत्रिका में उच्चकोटि के विद्वानों के सारगर्भित लेख प्रकाशित करके आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों के अनुसार प्रचार करते हुये यह पत्रिका जन-जन तक पहुँचे। ताकि वे इसका पूर्णतया लाभ प्राप्त कर सकें। लेकिन यह तभी सम्भव है जब आप सबका सहयोग हमें मिले।

'तपोभूमि' मासिक के पाठको से निवेदन है कि जिन्होंने अपना वार्षिक शुल्क चालू वर्ष या पिछले वर्ष का शुल्क अभी तक नहीं भेजा है। वे शीघ्रातिशीघ्र शुल्क भिजवाने की व्यवस्था करें। वार्षिक शुल्क 150/- एक सौ पचास रुपये तथा पन्द्रह वर्ष हेतु 1500/- एक हजार पाँच सौ रुपये भेजकर पत्रिका पढ़ने का लाभ उठायें।

हम आपको प्रति माह पत्रिका पहुँचाते रहेंगे। आपके सहयोग व हमारे परिश्रम से निरन्तरता बनी रहेगी और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी व आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार जन-जन तक भी होता रहेगा।

हमें अपने ग्राहक महानुभावों से यही अपेक्षा है कि बिना विघ्न कार्य सुचारू रूप से चलता रहे। साथ ही यह भी प्रार्थना है कि आप अपने परिश्रम से नवीन ग्राहक बनवाने का सौभाग्य प्राप्त करें।

-धनराशि भेजने हेतु बैंक का नाम व पता एवं खाता संख्या-

इण्डियन ओवरसीज बैंक

शाखा युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, जयसिंहपुरा, मथुरा

I F S C Code- IOBA 0001441

'सत्य प्रकाशन' खाता संख्या- 14410100002341

दान हेतु- 'श्री विरजानन्द ट्रस्ट' खाता संख्या- 144101000000351

सत्साहित्य का प्रचार-प्रसार करना राष्ट्र की सर्वोत्तम सेवा है।

गतांक से आगे–

उद्देश्य और कार्य-प्रणाली में मौलिकता

लेखकः पं० माधवराव

जीवन-संग्राम में विजय प्राप्त करने के बहुत से उपाय पिछले अंकों में बतलाये जा चुके हैं। अब हम यह बतलाना चाहते हैं कि उद्देश्यों और कार्य करने की पद्धतियों में नवीनता और मौलिकता हुए बिना सफलता की सम्भावना कम रहती है, तथा स्वावलम्बी वृत्ति के बढ़ाने में सदैव बाधा उपस्थित हुआ करती है। अतएव इस हेतु को सिद्ध करने के लिए अन्धःअनुकरण-शीलता तथा निरन्तर अनुकरणशीलता का त्याग करना चाहिए। केवल नकल न करते रह कर कुछ नया मार्ग ढूंढ़ निकालना चाहिए। ऐसा होना तभी सम्भव है जब हम कुछ विशेषता प्राप्त करें। चाहे हम बजीजी करें, वकालत करें, मजदूरी करें, गम्भीर वक्ता बनें अथवा जो कुछ करें, परन्तु जब तक हमारे काम करने की पद्धति में कुछ विशेषता, नवीनता और मौलिकता न होगी तब तक हमारी साधारण योग्यता पर लोगों का ध्यान आकर्षित न होगा। जब तक किसी व्यक्ति का नाम उसके कार्य के सम्बन्ध में लाखों मनुष्यों की जिह्वा पर न नाचेगा तब तक वह कोई विशेष महत्वपूर्ण काम नहीं कर सकता। यह केवल विशेषता प्राप्त करने से साध्य हो सकता है। अपनी कार्य शैली में थोड़ी सी विशेषता प्राप्त कर लेने पर अनन्त द्रव्योपार्जन कर सकना, चिरंतन यश-लाभ कर सकना और संसार का स्थायी लाभ कर सकना भी सम्भव हो सकता है।

मौलिकता-किसी काम को आरम्भ करने के पहले तनिक सा विचार कर लेना-जिस दर्जे तक रहेगी उस दर्जे तक सफलता कैसे मिल सकती है, इसका एक अच्छा उदाहरण है। किसी समय विलायत में पीतल की घड़ी बनानेवाला एक बड़ा नामी घड़ीसाज था। वह वहाँ की जनता में सदा अपना नाम बनाये रखने के लिए अपनी बनाई घड़ियों में कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य करता रहता था और उसकी सूचना समाचार-पत्रों में दे दिया करता था। उसमें इतनी योग्यता न थी कि वह कुछ नया आविष्कार कर सके, पर वह अपने पुराने सांचों में कुछ सुधार अथवा रूप-परिवर्तन किये बिना नहीं रहता था। कभी कांटे बदल दिये जाते थे, कभी आकार ही बदल दिया जाता था, कभी घड़ियों में लाल के बदल हरा रंग चढ़ा दिया जाता था, कभी घड़ियों केवल सादेपन से काम लिया जाता था, कभी उनमें कुछ आकर्षक चित्र रख दिये जाते थे, कभी घड़ियाँ आवाज दिया करती थीं, इत्यादि। इन बातों का समय-समय पर विज्ञापन देकर उसने अपनी थोड़ी सी बुद्धि-विशेषता से हजारों ग्राहक पैदा कर लिये और वह विलायत का एक प्रसिद्ध घड़ीसाज कहलाने लगा। न तो उसने कुछ नूतन आविष्कार किया और न वह पुराने आविष्कारों में कुछ विशेष सुधार ही कर सका, परन्तु थोड़ी सी मौलिकता के कारण उसने बड़ा यश और द्रव्य कमाया। जो लगाकर काम करने से ऐसा होना सहज है।

अपने व्यवसाय और योग्यता की उन्नति तथा वृद्धि करने में संकीर्णता और अन्धपरम्परा से बहुधा घातक परिणाम हुआ करते हैं। वर्तमान समय की, बल्कि थोड़ी बहुत भविष्य की भी, आवश्यकताओं और आदेशों को ध्यान में रखे बिना कार्यसिद्धि कभी नहीं हो सकती। आजकल विज्ञान, बुद्धिचातुर्य और भयंकर प्रतिद्वन्द्वता का युग है। अब वे दिन नहीं रहे जब मनुष्य लकड़ी का एक छोटा सा जीर्ण शीर्ण हल रखकर संसार-सागर में कूद पड़ता था और दस बीस आदमियों के सम्मिलित कुटुम्ब का पालन-पोषण कर सकता था। बुद्धि खर्च किये बिना, थोड़ा विचार किये बिना, आसपास की दुनियां से सबक सीखे बिना, अब केवल शारीरिक परिश्रम और मितव्ययी स्वभाव से कुछ न हो सकेगा। यदि आप कपड़े के दुकानदार हैं तो पहले इस बात का निर्णय होने की कोई आवश्यकता नहीं है कि आप कितने देवताओं को मानते हैं अथवा आपकी समझ में कौनसी सबसे उत्तम राजनीति सम्बन्धी पुस्तक प्रकाशित हुई है, किन्तु आपको हजार मील की दूरी से यह अवश्य जान लेना चाहिए कि बम्बई, कलकत्ता, और मेनचेस्टर में इस समय कपड़े का क्या भाव है। जो मनुष्य किसी काम में नये शोधों की कुछ परवाह नहीं करता अथवा जो अपनी बुद्धि और आंखों को बन्द रखता है वह कभी सफल नहीं हो सकता।

अमेरिका के निवासी अपनी मौलिकता और नूतन आविष्कार-प्रियता के लिए समस्त संसारमें प्रसिद्ध है। परन्तु नकल करने में भी उनसे बढ़कर कोई नहीं मिल सकेगा फल यह होता है कि नये व्यवसाय या आविष्कार की छीछालेदर, दुरुपयोग और पतन जितनी जल्दी वहाँ होता है उतनी जल्दी कहीं नहीं होता। वहां संसार का छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा व्यापार नवीनता और मौलिकता के आकर्षक वस्त्रों में मढ़ दिया जाता है। ज्योंही दूसरे लोग उसकी सफलता और लाभ को देखते हैं त्योंही उस व्यपार में एक दो नहीं, हजारों मनुष्य, कूद पड़ते हैं। वहां का व्यापारी जनसमुदाय समुद्र के ज्वार-भाटा की तरह बड़े वेग से एक ही ओर दौड़ पड़ता है और अन्त में सबके सब किसी चट्टान से टकरा कर दिवालिये बन जाते हैं। आज भारतवर्ष के कई शहरों में भी वकीली पेशे और नौकरी की यही दशा है। किसी आदमी की बुद्धि के द्वारा ढूंढ़े गये किसी एक लाभकारी उद्योग में इस तरह की भीड़ करने से उसमें होने वाली आमदनी बहुत ज्यादा घट जाती है और उसकी अधोगति हो जाती है। इस बात की कोई आवश्यकता नहीं है कि विश्व-विजय करने के लिए कोई नैपोलियन किसी सिकन्दर की पुरानी तलवार को ढूंढ़ता फिरे।

साहित्य क्षेत्र में तो मौलिकता के बिना काम चलना बड़ा ही कठिन है। ख्याति प्राप्त करने के लिए और अपने समय के बाद भविष्य में अपना नाम स्थिर रखने के लिए ऐसी बातें कहनी या लिखनी चाहिएँ जो सचमुच कहे या लिखे जाने के योग्य हैं और जो तुम्हारी शैली के अनुसार पहले लिखी और कही न गई हों। अक्षरशः नकल और चोरी करने से लाभ कुछ नहीं होता। इसकी टेव पड़ जाने से मौलिकता का नाश होता जाता है। प्रायः देखा जाता है कि ज्योंही किसी सिद्धहस्त ग्रन्थकार का कोई उदात्त-विचारपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित होता है त्योंही उसके छोटे मोटे नकली स्वरूप भिन्न-भिन्न आवरणों की ओट में भिन्न-भिन्न आकार में प्रकाशित किये जाते हैं। परन्तु ये सब उस मूल ग्रन्थ के तेज के सामने

फीके पड़ जाते हैं। सच है, मूल ध्वनि को चिढ़ानोली प्रतिध्वनि धीमी ही रहा करती है। अथवा अनुकरणकर्त्ता अनुयायी अगुआ के पीछे ही चलता है। लेखकों को इस निन्दनीय अनुकरण–शीलता और मूर्खता का तिरस्कर करना चाहिए।

किसी नवलिखित अथवा प्रकाशित ग्रन्थ का अपमान "उह! यह तो केवल नकल है।" कह देने से हो जाता है। इसलिए किसी उधार की अथवा चोरी की वस्तु में अपने को गौरवान्वित समझने की अपेक्षा अपने रद्दी या छोटे से स्वतन्त्र कार्य को ही 'मेरा' है, किसी दूसरे का नहीं" कह सकना अधिक शोभाप्रद है। कौए को उचित है कि वह हंस के पंख धारण करने के लिए लालायित न हो। यदि तुम संसार के हित के लिए कुछ लिखना चाहते हो तो चोरी, झूंठ और नकल–बाजी का सहारा न लेकर संसार को यह बतलाओ कि अमुक विषय पर तुम्हारे आत्मा की क्या सम्मति है। यदि तुम्हारे आत्मा और मनोदेवता के विचार उपयोगी, सत्यपूर्ण और विशाल हैं तो संसार तुम्हें अपने हृदय में स्थान देगा। यदि वे हानिकारक, असत्यपूर्ण और संकीर्ण हैं तो भी कोई हर्ज नहीं। केवल यही होगा कि तुम एक साहस के, परन्तु सत्यता के, साथ प्रारम्भ किये गये पवित्र कार्य में असफल हो जाओगे। और इससे लाभ यह होगा कि तुम्हारे देश में एक असत्य, कपटी और चोर लेखक या ग्रन्थकार के बदले एक नया और सच्चा दुकानदार, नौकर, चित्रकार या किसान दिखाई देगा। इसलिये सदा अपनी सम्मतियों और विचारों को ही प्रकाशित किया करो।

स्मरण रहे कि, हम यहाँ असम्भव मौलिकता का प्रतिपादन नहीं कर रहे हैं। उत्तम से उत्तम और मूल–लेखक को भी, मधुमक्खी की तरह, कई स्थानों से सामग्री अवश्य एकत्रित करनी पड़ेगी। परन्तु उन सब पर अपनी छाप भी उसी तरह से जमा लेनी चाहिए जैसे मधुमक्खी जमा लिया करती है। वह मक्खी अनेक प्रकार के फूलों से रस एकत्रित करती है, परन्तु मधुरस में किसी खास फूल की गन्ध नहीं आने देती। लेखकों, ग्रन्थकारों और कवियों को भी यही करना चाहिए। गुसाईं तुलसीदास अपने स्वाभाविक तुलसीदासत्व से ही संसार को देदीप्यमान और मोहित कर सकते हैं पर इससे महर्षि वाल्मीकि, वेदव्यास, कालिदास अथवा सूरदास की विशेषताओं, गुणों और प्रतिभा में कमी अथवा फीकापन नहीं आता। सभी को उचित है कि वे अपने विचारों को अपने शब्दों में अपनी प्रणाली से व्यक्त करें। ढूंढ़नेवाले, इतिहास–शोधकों को ऐसे सैकड़ों ग्रन्थकारों, लेखकों और कवि खद्योतों का पता लग सकता है जो बन्दर की सी अनुकरणीशीलता के कारण आज किसी को उनका नाम तक याद नहीं है।

इस विवेचन से यही सिद्ध होता है कि तुम अपनी मौलिकता, कार्य–प्रणाली और स्वतन्त्र–विचार–शैली को बनाये रक्खो। केवल इसी से तुम्हारा यश बढ़ेगा और वह स्थिर भी रह सकेगा। जब तुम अपने आत्मा का हनन कर और स्वयं अपने प्रति सत्यता का आचरण न रखकर अपने आपको घृणा करते हो तो इस बात की भी आशा छोड़ दो कि संसार आदर करेगा। तुम अपने प्रति पहले सच्चे बनो, फिर संसार भी तुमसे सत्यता का व्यवहार करेगा। तुम्हारी व्यक्तिगत विशेषता ही तुम्हें संसार का आदरपात्र बना

सकती है। यदि तुम पगड़ी बांधते हो और इसमें तुम्हारा स्वाभाविक प्रेम है तो इस बात की कोई जरूरत नहीं कि दूसरों को देखकर तुम्हारी पगड़ी टोपी से बदल दी जाय। तुम्हारी विशेषता, विभिन्नता, और स्वतंत्रता उस पगड़ी से ही भली भांति सिद्ध होती है।

इन सब बातों से यही सिद्ध होता है कि सफलता केवल अनुकरणशीलता में नहीं है। बिना मौलिकता के कुछ नहीं होगा। जो कुछ काम, व्यवसाय अथवा सांसारिक व्यापार किया जाय उसमें जब तक उसके करनेवाले कर्ता का प्रतिबिम्ब हो तब तक यही समझना चाहिए कि उसमें कुछ न कुछ अंश मायामय, असत्यपूर्ण और वंचकता से भरा हुआ है। इसलिए मौलिकता–व्यक्तिगत विशेषता–की सच्ची छाप समस्त जीवन के प्रत्येक कार्य में होनी चाहिए। ❁

पाठकों से विनम्र निवेदन

'तपोभूमि' मासिक पत्रिका के उन पाठकों से विनम्र निवेदन है जिन्होंने वर्ष **2018 का वार्षिक शुल्क** बार–बार के पत्र लेखन तथा फोन द्वारा सूचना देने के बाद भी अभी तक जमा नहीं कराया है। वे वर्ष **2019** के वार्षिक शुल्क के साथ अविलम्ब **'सत्य प्रकाशन'** वेदमन्दिर, वृन्दावन मार्ग, मथुरा के कार्यालय को जमा करायें। शुल्क जमा न होने की स्थिति में पत्रिका बन्द कर दी जायेगी। आशा और विश्वास है कि पाठकगण अविलम्ब शुल्क भेजकर अपनी पत्रिका समयानुसार प्राप्त करते रहेंगे। जो महानुभाव ऑन लाइन द्वारा शुल्क जमा करते हैं वे फोन द्वारा कार्यालय को सूचित अवश्य करें ताकि उनका शुल्क जमा किया जा सके। वे पाठकगण धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने समय से पहले ही वर्ष 2020 का शुल्क जमा किया है। **—व्यवस्थापक**

महापुरुषों की जयन्ती		महापुरुषों की पुण्यतिथि	
सत्येन्द्रनाथ बोस	1 जनवरी	डॉ0 शान्तिस्वरूप भटनागर	1 जनवरी
गुरु गोविन्दसिंह	5 जनवरी	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	5 जनवरी
रविदास	10 जनवरी	लालबहादुर शास्त्री	11 जनवरी
स्वामी विवेकानन्द	12 जनवरी	जयशंकर प्रसाद	14 जनवरी
रोशनसिंह	22 जनवरी	डॉ0 होमीभाभा	24 जनवरी
रामकृष्ण परमहंस	26 जनवरी	महात्मा गांधी	30 जनवरी
लाला लाजपतराय	28 जनवरी		
जयशंकर प्रसाद	30 जनवरी		

5 जनवरी	राष्ट्रीय युवा दिवस	15 जनवरी	सेना दिवस
23 जनवरी	महर्षि दयानन्द बोध रात्रि	26 जनवरी	गणतन्त्र दिवस
26 जनवरी	सीमा शुल्क दिवस	30 जनवरी	शहीद दिवस

गतांक से आगे–

स्वास्थ्य चर्चा

मृगी (अपस्मार)

1. छोटी कटेली (पसर कटेली) के फल का रस निकालकर नस्य देने से अपस्मार रोग शीघ्र दूर हो जाता है।

2. कीकर का बुन्दा (कीकर के वृक्ष पर एक गोल गांठ–सी उत्पन्न हो जाती है) लेकर छाया में सुखा लें। तत्पश्चात् जौ–कुट कर लें।

आवश्यकता के समय मृगी के रोगी को कोरी चिलम में तम्बाकू के स्थान पर यह जौ–कुट दवा रखकर और ऊपर अग्नि के अंगारे रखकर जोर–जोर से कश लगाने को कहें। इस प्रकार कुछ लगाने से रोग सदा के लिए मिट जाता है। यह मृगी का अन्तिम उपचार है।

3. बच का कपड़छन चूर्ण 2 ग्राम को 6 ग्राम शहद में मिलाकर चाटने से मृगी तथा हिस्टीरिया के दौरे बन्द हो जाते हैं।

4. दो पुराने कनखजूरों को डिबिया में बन्द करके कण्डों की आग में कोयला कर डालें। फिर थोड़े–से कायफल से साथ घोट–पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। इसमें से दो ग्रेन (एक रत्ती) दवा नलकी के द्वारा रोगी के मस्तिष्क में पहुँचा दें। बस, मृगी जीवन–भर के लिए भाग जाएगी। यह मृगी की अचूक और अमोघ महौषध है।

5. अकरकरा 100 ग्राम, पुराना सिरका 100 ग्राम, शहद 140 ग्राम। पहले अकरकरा को पीसकर सिरके में खूब घोटें बाद में शहद भी मिला दें। सात ग्राम दवा प्रतिदिन प्रातःकाल चटाएँ। मृगी को जादू की भांति नष्ट करता है।

6. बच का चूर्ण 1 ग्रा प्रतिदिन शहद के साथ चटाएँ। ऊपर से दूध पिलाएँ। बहुत पुरानी और घोर मृगी भी दूर हो जाती है।

7. दो ग्राम तगर ठण्डे जल में पीसकर प्रतिदिन प्रातः निरन्तर एक मास पिलाने से मृगी और हिस्टीरिया में लाभ होता है।

8. करौंदे के पत्ते 10 ग्राम दही के तोड़ अथवा मठे में पीसकर प्रतिदिन निरन्तर 10–15 दिन सेवन कराने से मृगी रोग नष्ट हो जाता है।

9. 50 ग्राम नौशादर को एक लीटर (एक किलो) केले के पत्तों के रस में डालकर रखें। मृगी आने पर रोगी की नाक में टपकाएँ। मृगी का दौरा तुरन्त शान्त हो जाता है।

–(शेष अगले अंक में)

ईश्वर का वैदिक स्वरूप और गोस्वामी तुलसीदास

लेखकः रामस्वरूप आर्य, एटा (उ. प्र.)

ओउम् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।।

–अथर्व. 19.71.1।।

स्तुति करते हम वेद ज्ञान की।
जो माता है प्रेरक पालक पावन करती मनुज मात्र को।
आयु, बल, सन्तति पशु कीर्ती धन मेधा विद्या का दान।
सब कुछ देकर हमें दिया है मोक्षमार्ग का पावन ज्ञान।।

यद्यपि गोस्वामी जी महाराज ने अपना उपास्यदेव दशरथनन्दन श्री रामचन्द्र जी को माना है। किन्तु जब ईश्वर की वास्तविकता का वर्णन करते हैं तो लगता है कि श्री गोस्वामी जी महाराज ने वेदादि सत्–शास्त्रों का गहन अध्ययन अवश्यमेव किया था। चौपाईयों के पढ़ने पर सुविज्ञ पाठकों को भी ऐसा ही अनुभव होगा। पढ़िये एक उपनिषद् का मन्त्र और समन्वय कीजिये नीचे की चौपाईयों से–

अपाणि पादो जवनो ग्रहीतापश्यत्यचक्षुः स श्रृणोत्यकर्णः।
स वेत्ति विश्वं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्रयं पुरुषं पुराणम्।।

अर्थात्– परमेश्वर के हाथ नहीं परन्तु अपने शक्तिरूप हाथ से सबका रचन ग्रहण करता है। पग नहीं परन्तु व्यापक होने से सबसे अधिक वेगवान् है, चक्षु का गोलक नहीं किन्तु सबको यथावत् देखता है, श्रोत्र नहीं किन्तु सबकी बातें सुनता है। अन्तःकरण नहीं किन्तु सब जगत् को जानता है। और उसको अवधिसहित जानने वाला कोई नहीं। उसी को सनातन सबसे श्रेष्ठ सबमें पूर्ण होने से पुरुष कहते हैं। वह इन्द्रियों और अन्तःकरण के बिना अपने काम अपने सामर्थ्य से करता है।

चौ0 बिनु पग चलै सुनै बिनु काना। कर बिन कर्म करै विधि नाना।।
आनन रहित सकल रस भोगी। बिन वाणी वक्ता बड़ योगी।।
तनु बिन परस, नयन विन देखा। घ्राण बिन वास विशेषा।।
इमि सब भाँति अलौकिक करनी। महिमा तासु जाय नहिं बरनी।।
व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी। सत् चेतन घन आनन्द राशी।।
सकल विकार रहित गत भेदा। कहिं नित नेति निरूपहिं वेदा।।

–(बाल–काण्ड)

–(शेष पृष्ठ सं. 19 पर)

गतांक से आगे–

पशुओं के रोग, उनके लक्षण और चिकित्सा

बिना छूत के साधारण रोग

13. फोतों का सूजना

कभी चोट से, कभी बादी से या कभी इस रोग के कीटाणुओं से फोते सूज जाते हैं। पशु को बड़ा कष्ट होता है, वह पिछले पैर फैलाकर चलता है।

1. गीले कपड़े से बार-बार ठंडा पानी फोतों पर डालकर ठंडक पहुँचाइये।

2. हल्दी, चूना, फिटकरी, कड़ुवा तेल–सबको बारीक पीसकर गरम कर लें और फोतों पर सुहाता हुआ लेप करें।

3. इमली के पत्ते और नमक पीसकर गरम कर लें और फोतों पर लगावें।

खाने की दवा यह है–

2 माशा कपूर और 1 तोला कलमी शोरा 1 छटांक शराब में घोलकर पावभर पानी के साथ पिलाइये।

यदि बादी से सूज गये हों तो रेंड़ी का तेल 3 छटांक और त्रिफला का पानी पावभर मिलाकर पिलाइये तथा तमाखू के पत्ते गरम करके बाँधिये।

14. मिरगी (Apoplexy)

यह रोग प्राय: बच्चों को होता है या किसी कारण से सिर की ओर रक्त का बहाव हो जाने से बड़े पशु को भी हो जाता है। पशु सहसा काँपने लगता है, गिर जाता है, नेत्र लाल हो जाते हैं।

रोगी को दिन में चार बार ठंडे जल से स्नान कराना चाहिये। दवाएँ नीचे लिखी हैं–

1. बबूल और बेर के आध-आध पाव कोमल पत्ते पीसकर आध सेर ठंडे पानी में पिलाइये।

2. ढाक के बीज 1 तोला, अनार की छाल 1 तोला, सौंफ 1 तोला, अमलतास 1 तोला–इन सबको आध सेर पानी में पकायें; जब पानी पावभर रह जाय तब गुनगुना पानी पिला देना चाहिये। इसके बाद मीठा सरसों या अलसी का आध सेर तेल तथा आधी छटांक तारपीन का तेल पिलावें। बेहोशी की दशा में रीठे का छिलका पीसकर सुंघावें या कंडे की राख में आक का दूध मिलाकर सुंघावें।

15. ज्वर (Fever)

खाने-पीने की गड़बड़ी से, मौसम बदलने से या मच्छर काटने से पशु को ज्वर हो जाता है।

1. आठ औंस एप्सम साल्ट में 4 माशा कुनैन मिलाकर गरम पानी में घोल लें, फिर 4 माशा कपूर और 8 माशा शोरा मिलाकर दिन में 3 बार पिलावें।

2. गोमा घास के फूल छटांक और कालीमिर्च 1 तोला आध सेर पानी में गरम करके पिलावें।

3. शोरा 1 तोला, नमक 2॥ तोला तथा चिरायता 2॥ तोला आध पाव राब या गुड़ में मिलाकर खिला दीजिये।

16. बिल्ल या सफेद झागवाला कीड़ा

घास में एक प्रकार कीड़ा होता है, जिसको खा लेने से पशु का शरीर अकड़ जाता है, हाथ-पैर न हिलाकर वह चुपचाप पड़ा रहता है। ऐसी दशा में उसे आराम से पड़ रहने देना चाहिये। उसके ऊपर कम्बल डालकर ऊपर छाया भी कर देनी चाहिये।

1. एक सेर प्याज खिलाकर थोड़ी देर के लिये उसका मुँह बाँध दीजिये।

2. आध पाव सज्जी पानी में घोलकर पिलाइये।

3. एक तोला पिसी हुई कालीमिर्च पावभर घी में मिलाकर और गरम करके पिला दीजिये।

17. ताव या घामड़ा (Sunstroke)

कड़ी गरमी में लू लगने से या धूप में अधिक समय तक काम करने से यह रोग हो जाता है। पशु छाया या पानी में बार-बार बैठता है, कम खाता है और दुबला होता जाता है।

1. कच्चे आम का पना सबेरे-शाम पिलाइये।

2. पावभर सफेद तिल रात को भिगो दीजिये और सबेरे पीसकर सात दिन तक पिलाइये।

3. शीतकाल में यह रोग हुआ हो तो पुरानी मूँज 1 पाव काटकर उसे 1 सेर गुड़ में डालकर अच्छी तरह औटाना चाहिये और दिन में दो बार 4 दिन तक देना चाहिये या पशु की पूँछ में थोड़ा नश्तर लगाकर 2 रत्ती अफीम भर दें और पट्टी बाँध दें।

4. यदि ग्रीष्म-ऋतु हो तो आध सेर मसूर की दाल उबालकर और 4 तोला नमक डालकर 4 दिन तक खिलावें।

5. शीशम, लिसोड़ा और बबूल-तीनों की आध-आध पाव पत्तियाँ लेकर 24 घंटे पानी में पड़ी रहने दें, फिर निकालकर आध पाव सूखे आँवले और एक पाव कच्ची खाँड़ डालकर पिला दें।

6. पशु की साँस चलती हो तो थोड़ी-सी कपास कडुवे तेल में भिगोकर खिलाना लाभदायक है।

18. विष खा जाना (Poisoning)

कभी-कभी कोई पशु चारे के साथ कोई घोर विषैला कीड़ा खा जाता है या कोई दुष्ट मनुष्य विष खिला देता है। ऐसी दशा में नीचे लिखी दवाइयाँ करनी चाहिये-

1. डेढ़ सेर घी में 1 सेर एप्सम साल्ट मिलाकर पिलाना चाहिये।

2. कोई जुलाब की दवा दे देनी चाहिये।

3. एक सेर गरम दूध में आधी छटांक तारपीन का तेल अच्छी तरह मिलाकर पिलाइये और फिर केले की जड़ का रस 1 पाव तथा 1 तोला कपूर मिलाकर पिलाना चाहिये।

19. चरी द्वारा विष खा जाना (Corn-Stalk)

वर्षा के दिनों में जब पानी पड़ना बन्द हो जाता है और चरी छोटी हो जाती है, तब उसमें एक प्रकार का विष उत्पन्न हो जाता है। वही चरी खा लेने से पशु को विष चढ़ जाता है और वह तत्काल गिर पड़ता है। दांत-जीभ काले पड़ जाते हैं।

पशु को शीघ्र किसी तालाब या नदी में डाल दें। यह सम्भव न हो तो उसके ऊपर खूब पानी छोड़ें। गीली जगह से कीचड़ लेकर सारे शरीर पर पोत दें। जुलाब की कोई औषधि दें।

1. आध सेर सज्जी 2 सेर पानी में घोलकर पिलावें।

2. एक सेर कड़ुवा तेल पिलावें या एक सेर चूल्हे (लकड़ी की) राख पानी में घोलकर पिलावें।

3. आध सेर घी और दो सेर दूध पिलावें या आध पाव कत्था 1 सेर ठंडे पानी में घोलकर पिलावें।

4. कालीमिर्च 1 तोला, हींग 1 तोला, सोंठ 1 तोला, अजवाइन 1 तोला, काला नमक 2 तोला-सबको महीन पीसकर आध सेर गुनगुने पानी में मिलाकर पिलाना चाहिये।

20. लकवा (Paralysis)

इस रोग में पशु का आधा या सारा अंग निर्जीव हो जाता है। उस स्थान पर सुई चुभोने से दर्द नहीं होता।

1. आधी बोतल शराब में 1 छटांक सोंठ और आधा औंस कपूर मिलाकर प्रतिदिन देना चाहिये।

2. शरीर को गरम रखना और लकवा मारे हुए अंग पर कपूर और मीठे तेल की मालिश करना।

3. कुचला 4 माशा, सोंठ 6 माशा, हीरा कसीस 6 माशा, नमक आधी छटांक-सबको कूट-पीसकर आध सेर गरम पानी में घोलकर पिलाइये।

4. आधी छटांक सरसों पीसकर पानी में लेप बना लीजिये और लकवे के स्थान पर लगाइये।

5. अदरख 2 तोला, शराब 5 तोला तथा भुनी हींग 6 माशा दो-दो घंटे बाद देना चाहिये।

21. गठिया या जोड़ का दर्द (Rheumatism)

सर्दी से, वर्षा में भीगने से या रक्त-विकार से यह रोग हो जाता है। पैरों के जोड़ों पर सूजन आ जाती है।

1. दो सेर सूखी या 3 सेर हरी गोमाबूटी (मलडोडा) को कतरकर 5 सेर पानी में औटावें, 1 सेर

रह जाने पर बूटी निकालकर फेंक दें। दो छटांक पिसी हुई कालीमिर्च और 1 पाव काला नमक डालकर 7–8 दिन तक पिलावें।

2. एक सेर कडुई तरोई 5 सेर पानी में उबालें; जब पानी 1 सेर रह जाय, तब उसे छानकर आध पाव कालीमिर्च तथा पावभर काला नमक डालकर दो भाग कर लें और सबेरे–शाम पिलावें।

3. एक सेर पिसी हुई मेथी में आध सेर गुड़ और 1 छटांक अजवाइन मिलाकर 15 दिन तक खिलावें।

4. दो घुँघची (सोना तौलनेवाली रत्ती) पीसकर आध सेर गुड़ में 4 दिन तक खिलाना चाहिये।

5. एक तोला कपूर, 1 छटांक तारपीन का तेल तथा 1 पाव तिल के तेल को खूब मिलाकर मालिश करना चाहिये।

6. एक पाव लहसुन कुचलकर आध सेर तिल के तेल में पकावें और फिर तेल छानकर मालिश करें।

22. प्रसूत का ज्वर

यह रोग प्रसूत के दु:ख–दर्द से, बच्चे की उतरी हुई झिल्ली भीतर रहकर सड़ जाने से अथवा ब्याते समय ग्वाले के मैले कुचैले हाथ लगाकर नाखूनों का विष चढ़ने से हो जाता है।

पहले घी मिली हुई कोई दस्तावर दवा देनी चाहिये, फिर थोड़ी ग्लिसरीन और जरा–सा कार्बोलिक एसिड पानी में डालकर पिलाना चाहिये।

सोंठ, अलसी तथा कालीमिर्च एक–एक तोला एवं नौसादर आधा तोला कूट–पीसकर 1 पाव गुड़ में खिलाइये।

पीने के लिये 1 तोला कलमी शोरा मिलाकर गुनगुना पानी दीजिये।

23. थन सूजना (Udder-Inflammation)

कभी–कभी बच्चे के जोर से मुँह मार देने से, दूसरे पशु के सींग मार देने से या दूध का अत्यधिक जोर होने पर थन सूजकर कड़े हो जाते हैं।

1. एक छटांक कलमी शोरा आध सेर गरम पानी में मिलाकर तीन दिन तक पिलाना चाहिये।

2. नीम के पत्तों के उबले हुए पानी से सेंक करने के बाद गेरू और अजवाइन पानी में मिलाकर पकावें और फिर लेप कर दें।

24. योनि में कीड़े पड़ना

नीम के पत्ते पानी में उबालकर उससे पिचकारी द्वारा धोइये, फिर तारपीन का तेल और मीठा तेल मिलाकर रूई के फाहे डुबोकर चिमटी से अन्दर कर दीजिये। इस प्रकार सबेरे शाम कई दिनों तक दवा लगानी चाहिये।

–(शेष अगले अंक में)

गतांक से आगे

योग चिकित्सा का मूल तत्त्व

लेखकः पं. अत्रिदेव गुप्त भिषग्रत्न

इसके उत्तर के लिये आयुर्वेद में चरक शारीरस्थान 4-5 अध्याय देखिये। प्राचीन आर्य इस बात को भली प्रकार जानते थे, कि अण्ड का अन्तः तथा बाह्य स्रावों से अधिक सम्बन्ध है।

तान्त्रिक व्यायामों को आधार Testicular harmones को बाह्य खर्च के अनुसार बढ़ाना है। परन्तु विशेष व्यायामों से बाह्य स्राव को रोक कर धर्म के लिये ऊर्ध्वरेता होना है। इन व्यायामों से Sexual hypertrophy हो जाती है। जिससे कि शुक्राणु घट जाते हैं और Testicular harmones बढ़ जाता है।

प्राचीन आर्य यह विश्वास रखते थे, कि ओज वातिक संस्थान को शक्ति एवं उत्तेजतना देता है।

1. परीक्षण बताते हैं कि Spermine, glycero phosphate के अनुसार कार्य करते हैं।

यह स्पष्ट है कि हिन्दू योगी की Sexual Hyperfunction रोगजन्य नहीं है।

इस प्रसंग में यह लिखना अनुचित नहीं कि उच्च श्रेणी के Hyperfunction या Sexual Abuse का नष्ट हो जाना मैक्सेको के पूर्व पुरुषों में पाया जाता है। धार्मिक उद्देश्य से दिन में कई बार शारीरिक कठिन व्यायाम (घोड़े की पीठ पर लगातार सवारी) से Mastutbate करते थे जिससे अण्डक्षीणता (Atrophy) तथा अण्ड संज्ञाशून्य हो जाता था।

यह सिद्धान्त प्राचीन हिन्दुओं में भी पाया जाता है। ओज को बढ़ाने के लिये शुक्रवाहि Seminual Tubes की क्षीणता करते थे, परन्तु मैक्सको के लोगों का उपाय जंगली तथा रोगोत्पादक (Pathological) है। दूसरी तरफ हिन्दुयोगियों का धीरे-धीरे लगातार व्यायाम आसनों से दबाव बढ़ाना जिससे रोगोत्पादक अवस्था उत्पन्न नहीं होती थी।

जिन नियमों पर यह व्यायाम निर्भर है वह नियम यह है कि शरीर का प्रत्येक बाह्य द्वार (Outlet) और अन्तःद्वार (Inlet) विरुद्ध कार्य करता है अर्थात् मुख अन्तःद्वार (Inlet) है परन्तु वमन के समय बाह्यद्वार (Outlet) हो जाता है। इसी प्रकार गुदा (Anus) बाह्यद्वार है परन्तु व्यायाम से पानी वायु के अन्तःप्रवेश के समय (Inlet) अंतःद्वार हो जाती है। इसी प्रकार उपस्थ बाह्यद्वार है परन्तु अवस्थाओं से वह (Inlet) अंतःद्वार किया जा सकता है।

हठयोग का व्यायाम जिसका अभिप्राय अनैच्छिक संस्थान को इच्छानुकूल संस्थान करना है। इस प्रकार शरीर के सम्पूर्ण अवयवों की क्रिया को नियमित करके अपनी इच्छा के अनुसार अर्थात् बाह्यद्वार

को अन्त: और अन्त: को बाह्य बनाना है।

स्वास्थ्य के लिए तथा रोगों से बचने के लिए अवयवों को नियमित करना है। स्वस्थ अवस्था में प्रत्येक कोष्ठ एक विशेष प्रकार का कम्पन उत्पन्न करता है और प्रत्येक भिन्न रोग से उस कम्पन की राशी तथा कम्पन में अन्तर आ जाता है। हठयोग का उद्देश्य अपनी व्यायाम से अनुचित कम्पनी को रोक कर नियमित करना है और यह कार्य अनैच्छिक वातसंस्थान नियमित करने से ही हो सकता है। इसके लिये धैर्य, दु:ख उठाने की शक्ति व्यायाम आदि बातों की आवश्यकता है।

पाठकवृन्द! अब आपने देखा कि शरीर में ओज क्या वस्तु है उसकी क्या उपयोगिता तथा कितनी आवश्यकता है।

प्राच्य और नव्य दोनों ही पक्ष आपके सामने हैं आप स्वयं उनकी समान तुलना कर सकते हैं। दोनों पक्ष एक ही बात का पोषण कर रहे हैं। दोनों ही जीवन का आधारभूत पदार्थ तथा सौम्यगुणी होने से शरीर के लिये आवश्यक स्वीकार कर रहे हैं। शरीर में उसकी वृद्धि करने के लिये ऋषि लोग इस संसार को छोड़ कर जंगल में कन्दमूलादि आहार तथा शरीर को नाना प्रकार की तपस्य से क्लेशित कर, ब्रह्मचर्य को धारण करते हुए अपना जीवन बिताते थे।

इसी ओज वृद्धि के लिए तप, स्वाध्याय, ब्रह्मचर्य तथा अन्य अपवर्ग मार्ग स्वीकार करते थे। (चरक –शारीर स्थान)

इस परिच्छेद में आपने अग्नि, वीर्य, आर्तव, ओज इन चारों की समानता तथा शरीर के लिये आवश्यकता को देखा इनमें से एक की भी यदि परिमाण से वृद्धि, क्षय या विकार हो जावे तो वह रोगोत्पादक कारण बन जाता है। इसी कारण से आचार्य ने इन को धातु शब्द से कहा है। ओज शरीर का धारण करता है परन्तु पोषण नहीं करता–अन्य वीर्य, मज्जा, अस्थि, मेद, मांस, रक्त, रस यह सप्त पदार्थ शरीर को धारण करते हैं। अतिरिक्त शरीर का पोषण भी करते हैं, अत: इनको धातु शब्द से आचार्य ने कहा है। ''धारणात् (डुधाञ्k~धारणपोषणयो:) धातव:' और ओज धातु नहीं कहा।

प्रमेह आदि रोग जो ओज क्षय है वह अपर ओज का है। पर श्रेष्ठ ओज का व्यापत्, विस्रंस आदि नहीं होते। यह सब विकार अपर ओज में आते हैं। पर ओज के क्षय से मृत्यु ही होती है।

इसी कारण से ओज को बल शब्द से आचार्य ने कहा है–

''तत्र खल् रसादीनां शुक्रान्तानां धातूनां यत्परं तेजस्तत् खलु ओजस्तदेव बलमित्युच्यते स्वशास्त्रसिद्धान्तात्।''

''तत्र बलेन स्थिरोपचितमांसता सर्वचेष्टासु अप्रतिघात: स्वरवर्णप्रसादोबाह्यानाभाभ्यन्तराणां च करणानामात्मकार्यप्रतिपत्तिर्भवति।'' (धन्वन्तरि:)

ऋषि अत्रि इसी ओज की रक्षा का ध्येय कहता है–

तन्महत्ता महामूलास्त्च्वौज: परिरक्षता।
परिहार्या विशेषण मनसा दु:खहतव:।
हृद्यं यत्स्यादौजस्यं स्रोतसां यत्प्रसादनम्।
तत्तत्सेव्यं प्रयत्नेन प्रशमो ज्ञानमेव च॥ –(अत्रि:) ❁

विज्ञान, दर्शन और धर्म

कुछ दिन पहले शिक्षित जगत् के नाम से जो समुदाय प्रसिद्ध था उसने यह फैशन-सा बना लिया था कि ईश्वर व धर्म दोनों का बहिष्कार करना चाहिए। उनकी समझ में इसका कारण यह था कि ईश्वर के मानने से मनुष्य को व्यर्थ बन्धन में पड़ना पड़ता है और धर्म लड़ाई झगड़े की चीज ही है। 19वीं सदी में यूरोप में प्रायः उपर्युक्त भांति के पुरुषों का शिक्षित समुदाय पर आधिपत्य था। उस समय यदि नितशे ने एक तरफ उद्घोषित किया कि इस विज्ञान के युग में ईश्वर की मृत्यु हो गई तो दूसरी ओर मेकाइल्ल बेकुनिन ने दावा किया कि If God Realy existed It wpuld be necessary to abolish him. अर्थात् यदि सचमुच कोई ईश्वर मौजूद है तो उसे नष्ट कर देना जरूरी है। बोलशविक शोर मचा रहे हैं कि मामूली अमीर और राजा से लेकर ईश्वर तक का आधिपत्य नष्ट कर देना उनके घड़े हुए साम्यवाद Socialism का उद्देश्य है। इस प्रकार के भ्रम मूलक विचार जनसमुदाय में क्यों प्रचलित हुए? इसे उचित रीति से मध्यकालीन यूरोप में धर्म के नाम से दार्शनिकों एवं वैज्ञानिकों पर हुए अत्याचार रूपी कार्य का प्रतिकार्य ही कह सकते हैं और दोनों कार्य और प्रतिकार्य में कुछ दर्जनों का अन्तर भले ही कोई कह देवे परन्तु श्रेणी का भेद नहीं कहा जा सकता। अर्थात् मध्यकालीन यूरोप में जो कार्य कुछ अज्ञानी पुरुषों ने धर्म के नाम से किए उनसे और जो काम अब उसी श्रेणी के पुरुष विज्ञान के नाम से कर रहे हैं उनमें नाम मात्र का ही अन्तर कहा जा सकता है।

उपनिषदों में जो एक प्रकार से आस्तिकवाद के व्याख्यान ग्रन्थ हैं बड़ी उत्कृष्टता के साथ विज्ञान Science दर्शन, (फिलासफी) और धर्म (Religion) का मूल तत्व और सीमा बताने का यत्न किया गया है। याज्ञवल्क्य अपनी विदुषी पत्नी मैत्रेयी को उपदेश देते हुए कहते हैं-

"आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्या मैत्रेय्यात्मनो वा अरे श्रवणेन मत्या विज्ञानेनेदं सर्वं विदितम्" दर्शनेन (वृहाद. 2।4।5) अर्थात् अरे मैत्रेयि! निश्चय आत्मा ही द्रष्टव्य, श्रोतव्य, मन्तव्य और निदिध्यासितव्य है। अयि मैत्रेयि! निश्चय आत्मा के दर्शन और श्रवण से, मनन, से और विज्ञान से यह सब विदित होता है।

याज्ञवल्क्य ने आत्मा पर्यन्त समस्त जगत् के ज्ञान के लिए तीन साधन बतलाए हैं।

1. दर्शन व श्रवण-इसी का नाम विज्ञान (साइंस) है।
2. मनन-दर्शन वा फिलासफी को कहते हैं।
3. निदिध्यासन- अनुभव Realisation का नाम धर्म है।

मनुष्य दर्शन और श्रवण के बाद ही मनन और मनन के बाद निदिध्यासन करने के योग्य होता है। इसीलिए कहा जाता है कि अनुभूत विज्ञान फिलासफी है तो अनुभूत फिलासफी नाम धर्म है। तीनों

की अपने-अपने दर्जों पर कितनी आवश्यकता है। और तीनों में कितना सहयोग है और किस प्रकार वे तीनों जीवन के उच्च उद्देश्य की प्राप्ति के साधन हैं ये सभी बातें याज्ञवल्क्य के एक छोटे परन्तु सारगर्भित वाक्य से प्रकट हो रही है।

भुर्भूवः स्वः इसी शिक्षा और समन्वित ज्ञान का समर्थन तीनों महाव्याहृतियों से भी होता है।

1-भूः- सत् प्रकृति,

2-भुः-चित्-आत्मा,

3- स्वः आनन्द-परमात्मा

अर्थात् भूर्भुवः स्वः कहो या सच्चिदानन्द यह ईश्वर का नाम इसीलिए है कि यह प्राकृतिक जगत् और आत्मिक संसार में मेल रखने वाला है। यदि आत्मिक जगत् धर्म का बोधक है तो प्राकृतिक जगत साइंस का विधायक है। (महात्मा नारायण स्वामी जी आस्तिकवाद के प्राक्कथन से) ❁

पृष्ठ सं. 11 का शेष-

मान्य पाठकगण, मात्र इन्हीं पक्तियों से जान लिया होगा कि ईश्वर का वास्तविक वैदिक स्वरूप क्या है। युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने आर्य समाज के दूसरे नियम में ईश्वर के कुछ नामों की व्याख्या की है। ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तिर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है।

वैदिक गीत

ओ3म् ! यत्राऽमृतं च मृत्युश्च पुरुषेऽधि समाहिते
समुद्रो यस्य नाड्यः पुरुषेऽधि समाहिताः
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।

- अथर्ववेद

पद्यानुवाद

जिसमें स्थित है अमरत्व और मृत्यु,
जिसके नस जाल हैं सिन्धु और सरिता।
उस ही आनन्द विधायक रूप को,
स्कम्भ के नाम से वेद है कहता।।

❁❁❁

आर्य समाज क्या है ?

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की अंग्रेजी कवयित्री श्रीमती ह्वीलरविल काक्स की दृष्टि में

"आपने विविध पतनकारी एवं अत्याचारपूर्ण अभिशापों से युक्त भारत देश में व्याप्त धार्मिक और सामाजिक विकृतियों ने एक जड़वादी नास्तिक समुदाय को जन्म दिया जो अध्यात्मवाद का विरोधी तथा भोगवाद का पृष्ठपोषक एवं प्रचारक था।

परन्तु अब आर्यसमाज नामक एक समाज का प्रादुर्भाव हुआ है। जो अन्धकार से आवृत मार्ग को प्रकाशित करता हुआ आया है।

इस समाज के कुछ सदस्य बड़े उत्साही, बलिदानी तथा उत्साही प्रवृत्ति के नवयुवक हैं साथ ही इसमें आधुनिक भारत के कुछ परिपक्व व्यक्ति भी शामिल हैं।

आर्यसमाज एक नया आधुनिक आन्दोलन है। प्रथम आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द ने 1875 ई0 में बम्बई में की थी। इसके श्रद्धास्पद प्रवर्त्तक ने कभी भी किसी नए मत या सिद्धान्त के प्रचार का श्रेय प्राप्त करने का दावा नहीं किया। वह सदैव अपने श्रोताओं और पाठकों को स्मरण कराया करते थे कि उनका तथा आर्यसमाज का लक्ष्य उस धर्म का उद्धार करना है जिसका वेद ने प्रतिपादन किया और प्राचीन आर्य जिसका अनुसरण करते थे।

आर्यसमाज की आस्था प्राचीन वैदिक धर्म में है और इसी का वह प्रचार करता है। इसीलिए आर्य जन इस बात का खण्डन करते हैं कि आर्यसमाज आधुनिक हिन्दू धर्म का एक स्वरूप है। अवश्य आर्यसमाज यह मानता है कि वर्तमान में हिन्दू धर्म कहा जाने वाला धर्म वैदिक धर्म का विकृत रूप है। आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य इस धर्म को प्राचीन विशुद्ध रूप प्रदान करना और संसार के लोगों को शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक दृष्टि से उन्नत करना है।

आर्यसमाज के उद्देश्यानुसार मानव का चरम लक्ष्य मनुष्य बनना और मोक्ष प्राप्त करना है। (ईवनिंग जनरल 1910 ई0) ❁

दीवारें आर्यसमाज नहीं,
मीनारें आर्यसमाज नहीं।
जहाँ वेद ज्ञान की ज्योति जले,
सजता है आर्यसमाज वहीं।।

–बहिन शान्ति नागर

गुलदस्ता - विचार सुमन

लेखकः महेन्द्रपाल आर्य, सि. ई. सेवानिवृत

किसी देश की महानता उस देश की विशालता, औद्योगिकीकरण या भौतिक सम्पन्नता पर निर्भर नहीं करती वरन् उस देश के नागरिकों के चरित्र पर निर्भर करती है।

श्रेष्ठ, सदाचारी, पुरुषार्थी सन्तान को जन्म देना ही परिवार, समाज और राष्ट्र की उन्नति एवं कल्याण की आधारशिला है।

सांसारिक लोग पुत्र होने से अपने को धन्य मानते हैं परन्तु दुष्ट और दुराचारी पुत्र होने से क्या लाभ है? वह काणी आंख के समान वृथा होता है जो देखने के काम तो आती नहीं पर दुखनी आकर कष्ट अवश्य देती है।

जैसे सूर्य समस्त लोकों को धारण एवं पवित्र करता है वैसे ही श्रेष्ठ सदाचारी पुत्र कुल को पवित्र करता है। -(ऋग्वेद 1-60-3)

"ऋणानि त्रीण्यंपा कृत्य मनो मोक्षे निवेशयेत" प्रत्येक मनुष्य पर जन्म लेते ही तीन ऋणों से उऋण होने का दायित्व आ जाता है। ऋषिगण, देवऋण और पितृऋण। इन तीनों ऋणों से मुक्त हुये बिना मोक्ष प्राप्त नहीं होता। इनमें पितृऋण से मुक्ति श्रेष्ठ सन्तान को जन्म देने पर ही होती है।

जो माता अपने पुत्रों को जन्म देकर यदि उन्हें सदाचार और शिष्टाचार में परिणत नहीं करती तो ऐसी माता पुत्र की ऋणी रहती है। जो पुत्र योग्य बनकर माता की आज्ञा का पालन नहीं करता वह बालक माता-पिता और आचार्य का ऋणी रहता है। -(ब्रह्मचारी कृष्णदत्त योगनिद्रा में दिया गया प्रवचन)

संसार के समस्त प्राणी ईश्वर की न्याय व्यवस्था में जीते हैं। अतः सब मनुष्यों को ईश्वरीय नियमों को धारण तथा पालन करना चाहिये। यही ईश्वर की उपासना है, पूजा है। यही सब उन्नतियों की उन्नति तथा सब सुखों का मूल है। कोई भी मनुष्य ईश्वरीय नियमों तथा न्याय व्यवस्था का उल्लंघन करके दुःखों से बच नहीं सकता।

मानव समाज के चार आदर्श हैं। संसार में वंशानुगत रोगों की वृद्धि न होने पावे। दूसरा प्रजा अनैतिक और अधर्म से आजीविका अर्जित करने वाली न होवे। तीसरा समस्त प्रजा पुरुषार्थी, कर्मशील, परिश्रम करने वाली होवे। चतुर्थ समस्त प्रजा न्यायप्रिय, निष्पक्ष, सदाचारी, विद्वान् तथा ईश्वर पर आस्था रखनेवाली अर्थात् आस्तिकता को धारण करने वाली होवे। तभी राष्ट्र महान बनता है।

जो न्याय, पक्षपात रहित, सत्यवेदोक्त ईश्वर की आज्ञा है उसी का यथावत सर्वत्र और सदाचरण करना ही मंगलाचरण कहलाता है। -(महर्षि दयानन्द)

जिस देश का प्रधानमंत्री झोंपड़ी में रहता है उस देश की जनता (प्रजा) भव्य भवनों में रहती है।

और जिस देश का प्रधानमंत्री (राजा) गगनचुम्बी अट्टालिकाओं में निवास करता है उसकी प्रजा झोंपड़ियों में रहती तथा भूखों मरती है। -(आचार्य चाणक्य)

आत्मा वैजायते पुत्रः सन्तान के रूप में पुरुष ही जन्म लेता है। यही बात निरुक्तकार भी कहता है। हे बालक! तेरा जन्म माता-पिता के अंग प्रत्यंग से हुआ है। तू माता-पिता का प्रिय होवे तथा शतवर्ष तक जीवे।

पूर्वजन्म के संस्कार हमें किसी सीमा तक प्रभावित तो करते हैं लेकिन वे हमारे संकल्पों की स्वतंत्रता के आड़े नहीं आते क्योंकि जीव कर्म करने में स्वतंत्र है। वास्तव में मनुष्य एक बीज के रूप में जन्म लेता है जो आगे की ओर खुलता है लेकिन आगे बढ़ने के लिए पिछला कुछ होना ही चाहिये।

प्रत्यक्षं ही अल्पम् अप्रत्यक्षं चानल्पम्।

ये रेव इन्द्रियेः प्रत्यक्षं क्रियते तान्येव संति चा प्रत्यक्षानि।।

यह जो प्रत्यक्ष दिखाई देने वाला जगत है वह अत्यन्त अल्प है और जो अप्रत्यक्ष जगत है जो दिखाई नहीं देता वह बहुत विशाल है। हम जिन इन्द्रियों से प्रत्यक्ष करते हैं वह भी अप्रत्यक्ष अर्थात् न दिखाई देने वाली है। परोक्ष सत्य को जानने के लिये प्रत्यक्ष सत्य ही आधार है।

विधाता ईश्वर जीव को जिस-जिस गर्भ में रहने के लिये जब-जब प्रेरित करता है तब-तब उस-उस गर्भ में वास करता है। वह अपनी इच्छानुसार जहां तहां नहीं जा सकता है। अर्थात् वह अपने पूर्वजन्म के शुभाशुभ कर्मफल को भोगने के लिये परमात्मा की आज्ञानुसार शरीर धारण के लिये गर्भ में प्रवेश करता है। माता-पिता के रज वीर्य (कारण) से शरीर प्राप्त करता है। -(चरक संहिता)

कन्या का उत्पन्न होना ही पिता के लिये चिन्ता का विषय है फिर यौवन में पदार्पण करने के लिये चिन्ता का विषय है कि इसे विवाह में किसे सौंपा जाये। विवाह होने पर इसे सुख मिलेगा या नहीं यह चिन्ता। सचमुच आज के समय में कन्या का पिता होना ही चिन्ता कारक है।

दो कार्य ऐसे हैं जिसे केवल स्त्री (पत्नि) ही अच्छी प्रकार कर सकती है। एक सन्तान का पालन दूसरा पति द्वारा अर्जित धन का सदुपयोग। पत्नि इतने लाभों का स्रोत है। 1. पुत्रोत्पत्ति, 2. धर्मकार्य, 3. रति सुख, 4. अतिथि सत्कार, 5. पितरों एवं स्वयं की मुक्ति। -(मनु. 9-28)

बुद्धिमान समाज अपनी स्त्रियों को धनोपार्जन की चिन्ता से मुक्त रखता है जिससे वह गृहस्थाश्रम को स्वर्ग बना सके। क्योंकि पुरुष इस कार्य को भली प्रकार नहीं कर सकता।

बच्चों के अधिकांश कुटेवों की प्रवृत्ति परिवार के दूषित प्रभावों से उत्पन्न होती है। या तो जब बच्चे के माता-पिता जीवित नहीं हों तो वे बुरे संस्कार सीख लेते हैं। यदि माता-पिता जीवित हों तो परन्तु उनमें सौहार्द न हों। झगड़ालु और कलहप्रिय हों, परिवार का वातावरण बच्चों को बिगाड़ देता है। माता-पिता चाहे अपने असन्तोष को छिपाने के लिये कितना ही नाटक करें लेकिन बच्चे मनोभावों को जान ही लेते हैं। आप दुनिया को धोखा दे सकते हो पर अपने बच्चों को नहीं। -('हमारे बच्चे' श्री संतराम बी. ए.) ❁

"कुछ मुख्य-मुख्य क्रान्तिकारियों का संक्षिप्त परिचय"

लेखकः खुशहालचन्द्र आर्य, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला), कोलकाता

प्रत्येक देश हितैषी भारतीय का यह पावन कर्तव्य है कि यह अपने देश में हुए क्रान्तिकारी जिनके बलिदानों से हमें आजादी मिली है, उनके जीवन के सम्बन्ध में थोड़ी-बहुत जानकारी जरूर-जरूर रखनी चाहिए। हम अपने दादा-परदादा की जानकारी इसलिए रखते हैं, जिससे हमें अपने परिवार के गौरव और प्रतिष्ठा का अनुभव होता है और परम्पराओं की जानकारी होती है। इससे एक प्रकार के आनन्द की अनुभूति होती है। इसी प्रकार हमारे देश का गौरव बढ़ाने वाले क्रान्तिकारियों को भी हमें स्मरण रखना चाहिए और उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने मन में भी देशभक्ति की अग्नि को प्रज्ज्वलित करनी चाहिए, और अपने देश की उन्नति व समृद्धि में हम क्या सहयोग दे सकते हैं, इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए। हम ऐसा कोई काम नहीं करें जिससे देश को हानि पहुंचे। इसी उद्देश्य से मैंने यह लेख लिखा है, जिसको मेरे देश का प्रत्येक नौजवान पढ़े और देश के हित में सदैव विचार करता रहे और ऐसा कोई काम नहीं करे जिससे देश को हानि पहुंचे और ऐसे काम करें जिससे देश उन्नति और समृद्धि की ओर अग्रसर होता रहे। यदि इन विचारों के सभी भारतीय हो जावें तो हमारा देश का चरित्रवान् और देशभक्त प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेन्द्र जी मोदी के साथ मजबूत होंगे और उनको देश की उन्नति व समृद्धिशाली बनाने में सहयोग मिलेगा। मेरी यही सद्इच्छा है कि क्रान्तिकारियों के जीवन सम्बन्धी जानकारी हर व्यक्ति रखे। हमारे देशवासियों द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए पहला प्रयास सन् 1857 में किया गया था। वह प्रयास असफल हो जाने के बाद, अंग्रेजों ने इतना कड़ा शिकंजा कस दिया था और देशवासियों को इतनी अधिक पीड़ा देने लगे थे जिससे वे सिर ऊँचा भी नहीं कर सके। चालीस वर्षों तक ऐसी ही घुटन बनी रही। सन् 1897 में चापेकर परिवार के तीन बन्धुओं ने अपना बलिदान देकर यह चुप्पी तोड़ी।

1. चापेकर के तीन बन्धुः- सन् 1897 में पूना में प्लेग फैलने के बहाने मकान खाली करवाने के लिए मिस्टर रैण्ड ने भारतीयों पर भारी अत्याचार किये और इनके मान-सम्मान को भी आघात पहुंचाया। तब चापेकर परिवार के दो सगे भाई जिनके नाम थे दामोदर चापेकर व बालकृष्ण चापेकर ने मिस्टर रैण्ड की हत्या करके इसका बदला लिया। और तीसरे भाई वासुदेव चापेकर ने उन मुखबिरों को गोली से उड़ाया जिन्होंने विश्वासघात करके चापेकर बन्धुओं को फांसी दिलायी थी। इस प्रकार आजादी के लिए तीन सगे भाई फांसी पर खुशी-खुशी झूल गये।

2. श्याम जी कृष्ण वर्माः- श्याम जी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर 1857 को कर्षन जी भंसाली के यहाँ गुजरात राज्य के कच्छ प्रदेश में माण्डवी नगर के समीप विलायत गांव में हुआ था। इनके माता-पिता का निधन इनकी बहुत छोटी अवस्था में ही हो गया था। वर्मा जी, बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि तथा

अत्यधिक मेधावी थे। मगर निर्धन परिवार से सम्बन्ध होने के कारण इन्होंने धनाढय लोगों के यहाँ काम करके अपना जीवन निर्वाह करना पड़ा। उन्हीं के सहयोग से ही वर्मा जी अपने परिश्रम के कारण अध्ययनरत रहे। इन्होंने सन् 1874 में महर्षि दयानन्द जी का मुम्बई में आचार्य कमलनयन से शास्त्रार्थ हुआ।

स्वामीजी के कई व्याख्यान सुने जिनसे वर्माजी महर्षि दयानन्द जी से बहुत अधिक प्रभावित हो गये और स्वामी जी ने मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना 1875 में की। तब सर्वप्रथम अध्यक्ष इनको बनाया और फिर स्वामी जी ने श्री विनियर विलियम के निवेदन पर वर्माजी को आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का संस्कृत प्राध्यापक बनाकर इंग्लैण्ड भेज दिया। वहाँ वर्माजी ने अपनी विद्वता से अपनी धाक जमा ली और अध्यापन के साथ-साथ अपना अध्ययन भी जारी रखा और एम. ए. करने के साथ-साथ बैरिस्टर भी बन गये। स्वामी जी वर्माजी को अध्यापन के साथ-साथ बाहर रहकर भारत को स्वतन्त्रता दिलाने का प्रयास करने की भी कही थी। इसलिए वर्मा जी ने 1905 में 25 कमरों का एक मकान खरीदकर उसका 'इण्डिया हाउस' नाम रखकर उसको क्रान्तिकारियों का आश्रय स्थल बना दिया जिसमें वीर सावरकर, भाई परमानन्द, लाला हरदयाल एम. ए., मैडम कामा, विपिनचन्द्र पाल आदि आते-जाते रहते थे। यहीं पर रहकर मदनलाल ढींगरा ने सर विलियम कर्जन वायली जो भारतीय युवकों को स्वधर्म और स्वदेश प्रेम से विमुख करता था, उसको गोली मारकर मृत्यु कर दी थी। वर्मा जी ने एक घोषणा की थी कि जो छात्र अंग्रेजों की नौकरी न करने की तथा तन, मन, धन से देश की सेवा का व्रत लेंगे, ऐसे युवकों को प्रतिवर्ष दो हजार रुपये छात्रवृत्ति के रूप में दिये जायेंगे। इस घोषणा के अनुसार बाल गंगाधर तिलक ने वीर सावरकर को इंग्लैण्ड इण्डिया हाउस में भेजा और सावरकर ने क्रान्तिकारियों को इतना अधिक प्रोत्साहित किया जिससे 'इण्डिया हाउस' क्रान्तिकारियों का केन्द्र बन गया। जब वर्माजी पर अंग्रेज गुप्तचरों की कड़ी नजर रहने लगी तो वे इण्डिया हाउस की पूरी जिम्मेदारी सावरकर पर लगाकर स्वयं 1907 में इंग्लैण्ड छोड़कर पेरसि (फ्रांस) चले गये। वहां पर भी श्रीमती भीका कामा के साथ क्रान्तिकारी प्रक्रिया करते रहे, फिर सन् 1914 में प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ गया तब वे पेरिस से स्विजरलैण्ड होते हुए जेनेवा चले गये और 31 मई 1930 में 73 वर्ष की आयु में उस वीर पुरुष, क्रान्तिकारियों के गुरु श्यामकृष्ण वर्मा का निधन हो गया।

3. लाला लाजपत राय:- पंजाब केसरी लाला लाजपतराय एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक ओजस्वी वक्ता समाजसेवी, सिद्धहस्त लेखक, कुशल सम्पादक, कट्टर राष्ट्रवादी, राजनीतिज्ञ, भावुक हृदय, शिक्षा शास्त्री एवं निर्भीक क्रान्तिकारी थे। लाला जी का पैतृक गांव लुधियाना जिले में जगराव था, मगर उनका जन्म उनके ननिहाल गांव ढुढ़ि के जिला फरीदकोट (पंजाब) में 28 जनवरी 1863 को हुआ। इनके पिता का नाम राधाकृष्ण तथा माता का नाम गुलाबीदेवी था। लाजपतराय जी की शिक्षा पांचवें वर्ष में आरम्भ हुई। सन् 1880 में इन्होंने कलकत्ता तथा पंजाब विश्वविद्यालय से ऐण्ट्रेंस की

परीक्षा एक ही वर्ष में पास की और आगे पढ़ने के लिए लाहौर आ गये। यहां पर उन्होंने गवर्नमेंट कॉलेज में प्रवेश किया तथा 1882 में एम. ए. और मुख्तारी (कानून) की परीक्षा एक साथ कर ली। यहां पर हंसराज तथा पं0 गुरुदत्त जी इनके सहपाठी थे तथा उन्हीं के माध्यम से उनका सम्पर्क आर्यसमाज से हुआ। वे आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द से इतने अधिक प्रभावित हुए कि वे कहते थे कि आर्यसमाज मेरी धर्म की माँ है तथा महर्षि दयानन्द मेरे धर्म गुरु हैं। 30 अक्टूबर 1883 में महर्षि दयानन्द जी का देहावसान हो गया तथा 9 नवम्बर 1883 को लाहौर में आर्यसमाज की ओर से एक शोक सभा का आयोजन किया। इस सभा में निर्णय हुआ कि महर्षि जी की स्मृति में एक महाविद्यालय की स्थापना की जाये। इसी क्रम में कालान्तर में डी. ए. वी. की स्थाना हुई जिसमें लाला जी की विशेष भूमिका रही।

इसके बाद सन् 1885 में लाला जी वकालत करने के लिए रोहतक आ गये। यहाँ रहते हुए उन्होंने वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली और उसके बाद 1886 में वे हिसार आकर वकालत करने लगे। साथ ही आर्यसमाज तथा कांग्रेस के माध्यम से समाज सेवा भी करने लगे। सन् 1905 में जब बनारस में कांग्रेस के अधिवेशन के अवसर पर ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन पर उनका स्वागत करने का प्रस्ताव आया तो स्वाभिमानी लालाजी ने इसका डटकर विरोध किया। मानो यहीं से कांग्रेस में गर्म व नरम दो दलों की नींव पड़ गई। कांग्रेस में इस विचार धारा के आदमी काफी हो गये कि स्वतन्त्रता केवल गिड़गिड़ाने से नहीं मिलेगी, इसके लिए कुछ कुर्बानियां देनी होंगी। इस विचारधारा के विशेष लालाजी, बाल गंगाधर तिलक व सुरेन्द्रनाथ पाल थे इसलिए लाल, बाल, पाल के रूप में गर्म दल काफी तेजी के साथ उभरा। सन् 1907 में पं0 गोपालकृष्ण गोखले के साथ एक शिष्टमण्डल के रूप में लालाजी इंग्लैण्ड गये, वहाँ से अमेरीका चले गये। कुछ दिनों बाद फिर स्वदेश लौटे।

सन् 1907 में किसानों का आन्दोलन भी काफी तेजी से उभरा, उसमें भी लालाजी व क्रान्तिकारी वीर भगतसिंह के चाचा अजीतसिंह ने विशेष भाग लिया। जिससे उनको देश निष्कासित करके वर्मा माण्डले जेल में भेज दिया। वहाँ लालाजी लगभग छः महीने रहे। इस अवधि में उन्होंने आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द आदि काफी पुस्तकें लिखीं फिर जनता के प्रबल विरोध से उन दोनों को छोड़ना पड़ा। तभी से क्रान्तिकारी गतिविधियां सक्रिय हो गईं। सन् 1921 में गांधी जी द्वारा चलाए गये असहयोग आन्दोलन में लालाजी ने सक्रिय भूमिका निभाई। सरकारी शिक्षण संस्थाओं तथा अदालतों का बहिष्कार किया गया। शराब के विरुद्ध आन्दोलन किया गया। इन्हीं दिनों कलकत्ता में कांग्रेस का एक विशेष अधिवेशन हुआ जिसकी अध्यक्षता लालाजी ने की। इन समस्त गतिविधियों में लालाजी की सक्रियता को देखते हुए सरकार उन्हें पुनः बन्दी बना लिया। जेल में इनका स्वास्थ्य बिगड़ गया तथा अठारह महीनों बाद ही इन्हें जेल से रिहा कर दिया गया। इसी बीच लालाजी दो बार इंग्लैण्ड की यात्राऐं कीं और देश में आये प्राकृतिक प्रकोपों में दीन–दुःखियों की बहुत सेवा की जिससे लालाजी की केवल भारत में ही नहीं विश्व में काफी ख्याति बढ़ गई।

लालाजी हिन्दू मुस्लिम एकता के पक्षधर रहे मगर गांधी तथा कांग्रेस की तुष्टिकरण की नीति को इस एकता में सबसे बड़ा व्यवधान मानते थे तथा इस परिपाटी से असन्तुष्ट होकर इन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द तथा मदनमोहन मालवीय आदि नेताओं के साथ मिलकर "हिन्दू महासभा" का गठन 1924 के आस-पास किया। कलकत्ता में सन् 1925 में महासभा का बहुत बड़ा अधिवेशन किया गया जिसकी अध्यक्षता माननीय लालाजी ने की थी।

अंग्रेज सरकार भारतीय जन-चेतना को किसी न किसी प्रकार छिन्न-भिन्न करने तथा उन पर नया से नया अत्याचार करने के लिए तरह-तरह के कृत्य करती रहती थी। साईमन कमीशन का बांठन तभी एक ऐसा ही कृत्य था। नवम्बर 18 सन् 1927 में ब्रिटिश प्रधानमन्त्री ने भारत के भावी संविधान पर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए एक आयोग का गठन किया जिसका अध्यक्ष जॉन साईमन था। इस आयोग में एक भारतीय भी नहीं था। इससे देशवासियों का क्रुद्ध होना स्वभाविक था। अतः साईमन कमीशन का प्रबल विरोध करने की योजना बनी। यह आयोग 30 अक्टूबर 1928 को लाहौर पहुंचा। लालाजी ने नेतृत्व में आयोग का विरोध किया। साईमन "गौ बैक" को गगनभेदी नारों से समूचा लाहौर गूंज उठा। सरकार ने धारा 144 लगा दी मगर जनता का यह समुद्र नारे लगाता हुआ स्टेशन की ओर बढ़ा। जैसे ही जुलूस स्टेशन पर पहुंचा। साईमन के आदेश से पापी साण्डर्स ने जुलूस पर क्रूरता से लाठियाँ बरसा दीं। लालाजी को लाठियों से पीट-पीटकर बुरी तरह से घायल कर दिया। सायं काल एक विरोधी सभा हुई जिसमें लालाजी ने किसी घायल सिंह की तरह गरज कर कहा "मेरे सीने पर लगी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के कफन में कील बनकर लगेंगी और 17 नवम्बर 1928 को प्रातः काल सात बजे पैंसठ वर्ष की आयु में इस महान् स्वतन्त्रता सेनानी ने सदा-सदा के लिए अपनी आँखें बन्द कर लीं। ❁

❁ जहाँ विकल्प है वहाँ पूर्ण समर्पण नहीं।

❁ विकल्पों की समाप्ति से ही संकल्प एवं निष्ठा दृढ़ होती है।

❁ विकल्पों की समाप्ति होना ही तो एकाग्रता है।

❁ हमारे समक्ष बहुत-सारी चीजें हैं-पदार्थ, विविध कर्म (सप्रयोजन क्रियायें) शान्ति, ज्ञान इत्यादि। जिसको जितना महत्व दिया जाता है उसी अनुपात में वह उपलब्ध होता है।

❁ महान् आत्माओं का आश्वासन है-सघन अन्धकार के बाद ही उषा आती है। उषा से तात्पर्य है प्रकाश का आगमन।

❁ कभी भी क्रोध की अवस्था में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए तथा अति प्रेम की अवस्था में कोई किसी के साथ वादा नहीं करना चाहिए।

❁❁❁

शुद्ध ज्ञान–हमारा सच्चा पथप्रदर्शक

लेखकः आचार्य प्रद्युम्न

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः।।

सरलता ही सुपथ है– **अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्**

एक–एक क्षण सावधान रहने से ही जीवन की साधना हो सकती है। जैसा ज्ञान वैसा जीवन, जैसा दर्शन वैसा प्रदर्शन, जैसा ज्ञान वैसी क्रिया। दर्शन को सदा–सर्वदा शुद्ध रखना चाहिए। हमारे सम्पूर्ण व्यवहारिक जीवन हमारे दर्शन की प्रतिच्छाया होती है। मनु ने भी कितना सुन्दर कहा है–

सम्यग्दर्शनसम्पन्नः कर्मभिर्न निबद्ध्यते।
दर्शनेन विहीनस्तु संसारं प्रतिपद्यते।। –मनु. 6.74॥

विषयों में सुख का दर्शन करने वाला व्यक्ति विषयों का सुख लिये बिना रह ही नहीं सकता। दूसरी तरफ विषयों में दुःख दर्शन करने वाला व्यक्ति कैसे विषयों से जुड़ सकता है?

जब दर्शन बिगड़ता है तो कर्म और उपासना (मन का लगाव) भी उसी के अनुरूप हो जाते हैं। कर्म और उपासना का प्रारम्भ तो दर्शन से ही होता है, पर आगे वे (कर्म, उपासना) दर्शन को शुद्ध व अशुद्ध बनाने में निमित्त बनते रहते हैं और इस प्रकार दर्शन में ही विलीन हो जाते हैं। दर्शन शुद्ध भी होता है और अशुद्ध भी; इसकी पहचान हमारी अन्तरात्मा, शास्त्र व गुरुजनों से होती रहती है। अन्तरात्मा (शुद्ध अन्तरात्मा), शास्त्र (सत्य शास्त्र) व गुरुओं (तत्त्ववेत्ता गुरुओं) का विधि–निषेधपरक समर्थन या असमर्थन ही शुद्ध या अशुद्ध दर्शन के ज्ञापक माने गए हैं।

वे लोग धन्य हैं जो शुद्ध दर्शन में ही रहते हैं। हम जो चाहते हैं वही पाते हैं, पर चाहत कभी भी दर्शन से विपरीत नहीं होती। चाह सदा–सर्वदा–सर्वत्र दर्शन के अनुरूप ही होती है। इसलिए सबसे पहले जो करने योग्य काम है वह है अपने अन्दर शुद्ध दर्शन को प्राप्त करने की चाह उत्पन्न करना। वह चाह स्वयं ही आगे का रास्ता खोज लेगी।

ऑपरेशन रूम में जब डॉक्टर प्रवेश करता है, तो अपना पूरा प्रबन्ध करके घुसता है कि रोगों के कीटाणु उसके शरीर में प्रवेश न कर जाएँ। ठीक उसी प्रकार, इस संसार में रहते समय ज्ञान–कवच धारण करके मनुष्य को रहना चाहिए। अपनी आँख, नाक, कान, मुख मन आदि पर ज्ञान व सतर्कता की पट्टी लगाकर विचरना चाहिए। न जाने किस मार्ग से विषय–कीट अन्दर प्रवेश कर जाएँ और मनुष्य के मन को रुग्ण बना दें। शरीर के रोग तो देर सबेरे ठीक हो भी जाते हैं, पर मन यदि रोगी हो गया तो फिर उसे

ठीक कर पाना बड़ा ही जटिल काम हो जाता है। अतः पूर्व सावधानी में ही सुरक्षा है Prevention is better than cure. रोगी पड़कर ठीक होने की बजाय क्यों न ऐसा उपाय किया जाये कि रोग ही न आए।

यह संसार तो हर प्रकार से मनुष्य को उत्तेजित करने के लिए तैयार रहता है। साधक की कुशलता इसी में है कि वह कैसे भी अपने आप को अनुत्तेजित रखे। प्रतिक्षण सजग, चौकन्ना (Alert) सचेत व प्रमादरहित व्यक्ति विषम से विषम परिस्थितियों में भी सहजता से पार हो जाता है। अभिमान से ही प्रमाद की शुरुआत होती है, अतः विनाश या सर्वनाश की जड़ इस अभिमान से बचकर रहना चाहिए।

साधक! सावधान! बस अपनी यात्रा में चलता चल। यह बिल्कुल मूर्खता से भरी बात है कि मैंनु अमुक विषय में पूर्ण विजय प्राप्त कर ली है।

एक मनुष्य है जब धूप सताने लगती है तो किसी वृक्ष की छाया में आकर बैठ जाता है। कुछ देर में ही वह धूप के कष्ट को भूलकर पुनः धूप में पहुँच जाता है। पर धूप तो धूप ही है, वहाँ लम्बे समय तो क्या थोड़े समय भी ठहरना कठिन हो जाता है और पुनः छाया को ही अपनी शरण देखता है। इस प्रकार धूप से छाया और छाया से धूप–यही उस मनुष्य का जीवन क्रम बन जाता है। यह छाया और धूप क्या है? इसे अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिए–विषयों की गर्मी जब व्यक्ति को जलाने लगती है तो दौड़कर भगवान की शरण, शास्त्र की शरण, गुरुजनों की शरण या आत्मा की शरण में आ जाता है, पर कुछ देर में ही भूल जाता है कि विषयों ने तुझे झुलसा दिया था, विषयों की आग को सहन न कर पालने के कारण ही उधर से भागा था और पुनः उसी आग में अपने को झोंक देता है। बार–बार अपने को जलाना और उस पर मरहमपट्टी करना, फिर जलाना, फिर ठीक करना और इसे जलाते रहना तथा उपचार करना, क्या यह बुद्धिमान् मनुष्य का लक्षण है?

बुद्धिमान् मनुष्य तो उसे ही कहना चाहिए– जिसने एक बार देख लिया कि यह आग है और आग का काम है जलाना, तो फिर उसमें सदा–सदा के लिए हाथ न डाले। यही है सच्चा वैराग्य। जिसे पैदा करने के लिए हम यहाँ हैं। कुछ लोग कह देते हैं कि ऐसा वैराग्य तो स्वतः ही पैदा होता है, पैदा किया नहीं जाता। पर यह बात ठीक नहीं। सतत दु:खदर्शन (जो कि यथार्थ है) करते–करते वैराग्य का जन्म हो सकता है।

आज धातुवृत्ति पढ़ाते समय निरुक्त के एक मन्त्र की तरफ ध्यान गया–

तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः।
ञ्न विन्धे अस्य सुष्टुतिम्।। –(ऋग्वेद 1. 7. 7)

भगवान के एक–एक दान पर विचार करता हूँ तो समाप्ति पर नहीं पहुँचता।

एक है मनुष्य की निम्नप्रकृति व दूसरी है उच्चप्रकृति (परा–प्रकृति)। दोनों प्रकृतियों के सत्य

पृथक्-पृथक् हैं। चुनाव हमारे हाथ में है, हमें क्या चाहिए? यदि मनुष्य चाहे तो प्रकृति का पूर्ण परिवर्तन सम्भव है, हाँ! मन की अबाधित अभीप्सा से ही यह कार्य सम्भव है। जब तक अपरा प्रकृति से परा प्रकृति में रूपान्तरण (Transformation) नहीं हो जाता, मनुष्य का मन निम्न प्रकृति के सत्य में ही रमा रहना चाहता है। जब मन भूतकाल की सुखद या दुःखद घटनाओं को दोहराता है तो समझना चाहिए कि निम्नप्रकृति की क्रियाओं में ही मन को रस आ रहा है।

जब हम किसी वृक्ष पर चढ़ते हैं तो जब तक हमारा प्रयास बराबर बना रहता है तब तक हम चढ़ते रहते हैं, पर यदि प्रयास छोड़ बैठते हैं तो वहीं रुक जाते हैं या जहाँ से चढ़ना प्रारम्भ किया था, वहीं पहुँच जाते हैं। अतः प्रयास की अपनी बहुत बड़ी महत्ता है। प्रयास का ही दूसरा नाम 'अभ्यास' है। गुरूपदेश, शास्त्रोपदेश अथवा सबसे महत्वपूर्ण जो चीज है वह है अपना अनुभव; उस अनुभव से जब एक बार किसी दुःख से मुँह मोड़ लिया तो पुनः उस तरफ न जाने का नाम है 'वैराग्य'।

मन की अत्यन्त गम्भीर, शान्त, शालीन व सौम्य स्थिति में ही सुख है। मन की अचंचल अवस्था में साधक को ध्यान से देखना या अनुभव करना चाहिए कि इस अवस्था में कितना अद्भुत सुख है। सांसारिक जनों का दर्शन अलग है, वहाँ तो विभिन्न आलम्बनों के द्वारा मन और इन्द्रियों को उत्तेजित करना, मन व इन्द्रियों के लिए मन व इन्द्रियों द्वारा चाही गयी चीजों को जुटाकर प्रस्तुत करना-बस! यही एक मात्र सुख का साधन माना जाता है।

दृष्ट या अनुभूत का ही दूसरा नाम 'ज्ञान' है। वह शुद्ध भी हो सकता है और अशुद्ध भी। जो चीज जैसी है उसे वैसा ही देखना या वैसा ही अनुभव करना 'शुद्ध ज्ञान' का लक्षण है। अपने मन के विचार या कल्पना के अनुसार आग्रहपूर्ण देखना-कभी भी शुद्ध ज्ञान नहीं हो सकता। आन्तरिक सजगता में मनुष्य प्रतिक्षण शुद्ध ज्ञान की स्थिति में रह सकता है।

जब तक आँखें संसार की तरफ से बन्द रहती हैं, तब तक ही ज्ञान बना रह सकता है। स्रष्टा से अलग केवल सृष्टि को देखना अवश्य ही अज्ञान को जन्म देगा। दृष्टि के साथ दृष्टा संयुक्त रहे तथा सृष्टि के साथ स्रष्टा को देखते रहें तो अज्ञान को अवकाश नहीं। हमें केवलमात्र दृष्टि व सृष्टि का मेल होने से बचाना चाहिए। दृष्टि व सृष्टि का मेल होते ही भोग प्रारम्भ हो जाता है। द्रष्टासंयुक्त दृष्टि से स्रष्टासंयुक्त सृष्टि को देखने में भोग का कोई स्थान नहीं। या फिर द्रष्ट स्रष्टा को देखता रहे-यही वैराग्य है। अमृत का आधार वह ब्रह्म है जो सर्वत्र एक रस भरा हुआ है। अमृत के उस स्रोत के साथ जब तक सम्पर्क बना रहता है, मनुष्य क्लेशरहित अवस्था में रहता है। कामना, स्वार्थ व इन्द्रियों की मांगें मनुष्य को उस मूलस्रोत से हटा देती हैं। यही मनुष्य की अज्ञानमय अवस्था है। मूलस्रोत के साथ जुड़े रहने का नाम ही ज्ञान है। यही वैराग्य है।

हमारे अस्तित्व के केन्द्र में अमृत तत्व का वास है, हम जब तक उस केन्द्र में बने रहते हैं-योगमय स्थिति में रहते हैं। केन्द्र से जब परिधि में आ जाते हैं तो भोग शुरू हो जाता है। परिधि अर्थात् मन व इन्द्रियाँ। ❀

विचार आखिर विचार ही है

रचयिताः बलवीरसिंह रंग

मिले न जो भावना का सम्बल
विचार आखिर विचार ही है॥
विचरती है भावना निरन्तर,
निखरती है साधना निरन्तर,
निखार आखिर निखार ही है।
मिले न जो भावना का सम्बल
विचार आखिर विचार ही है॥

गुजरती है यूँ भी जिन्दगानी,
न आये आँधी न बरसे पानी,
पवन उनन्चास हों मलय के
बयार आखिर बयार ही है।
मिले न जो भावना का सम्बल
विचार आखिर विचार ही है॥

मिटाते कलियाँ खिला-खिला के,
तृषा बढ़ाते पिला-पिला के,
चढ़ेगा कोई नशा कहाँ तक
उतार आखिर उतार ही है।
मिले न जो भावना का सम्बल
विचार आखिर विचार ही है॥

अजीब है पंछियों का डेरा,
कहीं है उड़ना कहीं बसेरा,
भले ही पतझड़ के गीत गा लो
बहार आखिर बहार ही है।

मिले न जो भावना का सम्बल
विचार आखिर विचार ही है॥

किसी ने अनुमान क्या लगाया,
जो तुमने खोया जो मैंने पाया,
कृपण को कोई कुबेर कह ले
उदार आखिर उदार ही है।
मिले न जो भावना का सम्बल
विचार आखिर विचार ही है॥

जो सब सुनेंगे वही कहूँगा,
पराया हो कर कहाँ रहूँगा
सजा बजा कर मुझे संवारो
दुलार आखिर दुलार ही है
मिले न जो भावना का सम्बल
विचार आखिर विचार ही है॥

तुम्हारी ही छवि निहारता हूँ,
तुम्हें बराबर पुकारता हूँ,
पुकार पर तुम न ध्यान देना
पुकार आखिर पुकार ही है।
मिले न जो भावना का सम्बल
विचार आखिर विचार ही है॥

❀❀❀

प्रतीक के दर्शन

लेखकः पं० चमूपति एम. ए.

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्यम्॥ 11॥ 31

(त्यम्) उस (जातवेदसम्) सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वाधार (देवम्) अग्निदेव को (केतवः) किरणें, ज्ञान, संसारभर के रत्न (उत्–उ–वहन्ति) उठाए–उठाए फिरते हैं। (विश्वाय दृशे) इसलिए कि विश्व उसे देख सके (केतवः) किरणें (सूर्यर्यम्) उसे सूर्य–रूप में (उद् वहन्ति) प्रकट कर रही हैं, उसकी ज्योति उठाए–उठाए फिर रही हैं।

विश्व के जीवन का आधार अग्निदेव है। वह सब उत्पन्न पदार्थों में विद्यमान है। विश्व की उत्पत्ति होती ही अग्निदेव की शक्ति से है। अग्निदेव उत्पत्ति के तत्व को जानता है, इस तत्व का ज्ञान प्रदान करता है। उत्पन्न पदार्थों का आधार भी अग्नि ही है। अग्नि से ही संसार पैदा होता है और अग्नि द्वारा ही स्थिर रहता है।

संसार में जिस–जिस पदार्थ की अनुभूति इन्द्रियों द्वारा होती है, जो–जो पदार्थ प्रत्यक्ष है, वह–वह अग्निदेव की मानो ध्वजा है। पृथिवी के तल पर, समुद्र की कोख में, हवा की लहरों में, अग्निदेव की ध्वजाएँ ही ध्वजाएँ फहरा रही हैं। रूप, अग्नि ही का गुण है। जो वस्तु रूप रखती है, वह अग्नि का अंश है। बिना अग्नि के संयोग नहीं हो सकता और सम्पूर्ण कार्य–जगत् संयोग ही की लीला है। यह लीला दूसरे शब्दों में अग्नि ही की है। ब्रह्माण्ड में कौन–सी ऐसी वस्तु है जो हमारे ज्ञान का विषय तो बन रही हो पर वह अग्निदेव की विभूति न हो?

यहाँ तो ज्ञान भी अग्नि ही का चमत्कार है। जीवानाग्नि अन्न को पचाती है, उसे बल का रूप देकर इन्द्रियों का वैभव बढ़ाती है। इन्द्रियों का यह वैभव अन्त को ज्ञान ही का रूप धारण करता है।

व्यक्तियों के ज्ञान के साधन भिन्न–भिन्न हैं। परन्तु इस ज्ञान में समता है। हमारा पारस्परिक मानस व्यवहार इस बात का साक्षी है कि ज्ञान एक है। मेरा भी मन है, मेरे भाई का भी। मेरी भी इन्द्रियाँ हैं, मेरे भाई की भी। मेरा मन मेरे भाई के मन से अलग है, फिर इन दो मनों का ज्ञान–व्यापार एक–सा क्यों है? जो मुझे प्रत्यक्ष है, उसे भी। अनुमान के क्षेत्र में भेद रहते हुए भी हम एक–दूसरे से विचार–विनिमय करते हैं। हम एक–दूसरे को समझते हैं, समझाते हैं और फिर भी किसी समान ज्ञान–बिन्दु पर पहुँचने का यत्न भी करते हैं।

यही बात आज सम्पूर्ण जातियाँ कर रही हैं। एक जाति ज्ञान की एक दिशा में उन्नति करती है, दूसरी किसी और दिशा में, और दोनों अपने ज्ञान–भंडार को सार्वजनिक बनाकर उसे संसारभर की

मानसिक सम्पत्ति का भाग बना रही हैं। दिनोंदिन इस ज्ञान-यज्ञ का विस्तार हो रहा है। क्या इससे यह ज्ञात नहीं होता कि व्यक्तियों तथा जातियों की पृथक-पृथक् इकट्ठी की गई ज्ञानराशि का आधार समान है? वही आधारभूत ज्ञान 'जातवेदा:' अग्नि है।

जगत् में रोग भी हैं, उनकी उपचार-रूप ओषधियाँ भी। ओषधियाँ हमेशा से विद्यमान चली आती हैं। किसी-किसी अन्वेषणकर्त्ता को अकस्मात् उनका ज्ञान हो जाता है। अब इस ज्ञान द्वारा ही उनमें उपचार की शक्ति आ जाती हो-यह बात तो है नहीं। रोग और उसके उपचार का सम्बन्ध नित्य है। हमारा ज्ञान उस सम्बन्ध को हम पर केवल प्रकट कर देता है। यही अवस्था सारे ज्ञेय जगत् की है। तारे का तारे से, ग्रह का ग्रह से, उपग्रह का उपग्रह से एक स्थिर साहचर्य है। हवा का फेफड़ों से, शाक आमाशय से, रुधिर का हृदय से एक स्थायी सम्बन्ध है। इन सम्बन्धों का ज्ञान वैज्ञानिकों को अब हो रहा है। तो क्या इन अनादि सम्बन्धों की स्थापना बिना ज्ञान के हुई है। कोई जरा-सी व्यवस्था भी तो बिना बुद्धि के नहीं हो सकती। तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सुसंगत सुघटित प्रबन्ध, जो ग्रहों-उपग्रहों से लेकर छोटे-छोटे अणुओं-परमाणुओं तथा जरा-जरा-से कोष्ठकों तक व्यापक है, बिना किसी बुद्धिमान की बुद्धिमत्ता के अपने-आप कैसे हो गया? हमारे अल्पज्ञान किसी सर्वज्ञ के महान ज्ञान के अंश-मात्र हैं। हमारी स्वल्प बुद्धियाँ किसी सवैज्ञ प्रज्ञा के विश्व-व्यापक ज्ञान-भंडार में से कोई-कोई कण ही चुन पाती हैं। यही हमारे 'केतुओं' द्वारा 'जातवेद:' अग्नि का 'उद्वहन' है।

विश्व-वेदा: अग्नि का प्रकट अंश सूर्य है। उसके प्रकाश तथा ताप को संसार के सभी प्रतीयमान पदार्थ ग्रहण कर रहे हैं। ग्रह और उपग्रह सूर्य ही की सन्तान हैं। सम्पूर्ण भौतिक जगत् कभी सूर्य का अंश था। उससे पृथक् होकर भी सभी पिंड तथा गोलक उसी की गर्मी से गर्म हैं, उसी की ज्योति से प्रकाशित हैं। सच तो यह है कि संसार का अणु-अणु अपने में एक छोटा सूर्य है। सूर्य विश्वाग्नि का मानो शिरोमणि है। किरणें इस अग्नि-पुंज के हाथ बनकर विश्व-यज्ञ में निरन्तर प्रकाश तथा ताप की आहुति डाल रही हैं।

जो क्रिया अप्रकट रूप से सर्वत्र हो रही है, उसी का सबसे अधिक स्पष्ट, सबसे अधिक प्रतीयमान रूप सूर्य का ताप-वितरण है। सूर्य यज्ञाग्नि का केतु है। द्युलोक की द्युतियों में सबसे आगे उभरा हुआ-सबसे अधिक स्पष्ट सूर्यमंडल ही है। ताप तथा प्रकाश के सभी संकेत सूर्य की ओर होते हैं।

सूर्य भौतिक यज्ञ का अति स्पष्ट उदाहरण है। इसका यज्ञ इन चर्म-चक्षुओं के द्वारा ही देखा जा सकता है। अध्यात्म के क्षेत्र में भी 'योऽसावादित्ये पुरुष: सोऽसावहम्।' जिसकी अंगुली ने सूर्य को उठा रखा है, जिसकी ज्योति से समस्त तारामंडल जगमग-जगमग कर रहा है, उस आध्यात्मिक ज्ञान-भानु का दर्शन भी इसी सूर्य के झरोखे से सुगमता से किया जा सकता है।

जातवेद अग्नि चाहे विश्व-व्यापक ताप हो और चाहे सर्वज्ञ प्रभु का विश्वदर्शी ज्ञान, सूर्य दोनों का अति सुन्दर उपलक्षण है। राजा तथा रंक दोनों इसकी ज्योति के प्रत्यक्ष दर्शन इन्हीं चर्म-चक्षुओं द्वारा कर सकते हैं। ❁

भारत माँ के लाल

रचयिताः– उमाधर मिश्र

तुम्हीं हो भारत माँ के लाल
बिना तुम्हारे कौन हटावे, महा – तिमिर जंजाल।
कर्मवीर तुम ही हो ऐसे, डरता जिनसे काल॥ 1॥ तुम्हीं0॥
नित्य कर्म–पथ पै दृढ़ रहना, कभी न देना टाल।
जीवन पथ में बचने के हित, सत्य बनाओ ढाल॥ 2॥ तुम्हीं0॥
कभी समय को व्यर्थ न खोना, पल पल समझो साल।
कृषि वाणिज्य बढ़ाओ ऐसा, माँ हो मालामाल॥ 3॥ तुम्हीं0॥
भारत मुख चिन्ता से पीला, कर दो सुख से लाल।
मिल मित्रों से शत्रु जीत कर, पहिनो जय की माल॥ 4॥ तुम्हीं0॥

अमनगनी आवासीय परिसर रिवाड़ी में भव्य वैदिक सत्संग

अमनगनी आवासीय परिसर में दि. 1 दिसम्बर 2019 को श्री त्रिलोकचन्द्र जी शर्मा एवं उनके सहयोगियों द्वारा भव्य सत्संग का आयोजन हुआ। वैदिक पुरोहित आचार्य सत्यवीर जी शास्त्री ने यज्ञ का संचालन किया। गुरुकुल मथुरा से पधारे ब्र. राष्ट्रवसु जी के मन–मोहक प्रेरणाप्रद भजन हुए तथा वेदमन्दिर के अधिष्ठाता आचार्य स्वदेश जी के द्वारा जीवन–निर्माण सम्बन्धी प्रवचन हुआ। इस अवसर पर आयोजक श्री त्रिलोकचन्द्र शर्मा ने लोगों को सम्बोधित करते हुए आवासीय परिसर का वैदिक परिवेश देने के लिए गत वर्षों में किये धार्मिक उपायों की विस्तृत चर्चा की और प्रतिमाह इसी प्रकार के सत्संग का आयोजन करने का संकल्प लिया उन्होंने अपनी आगामी योजना जो प्राणिमात्र के कल्याण को लेकर की उसका विवरण प्रस्तुत किया जिसका लोगों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।

गर्व को गाड़ दे, लोभ को टार दे।
क्रोध को काट दे, मार को मार दे।
ज्ञान की आग में, मोह को बार दे।
सत्य की सिन्धु में, झूठ को डार दे।

बबराला जनपद सम्भल उत्तर प्रदेश में

16 से 18 नवम्बर 2019 तक आयोजित विशाल आर्य महासम्मेलन सफलता के साथ सम्पन्न

गत 16 से 19 नवम्बर 2019 को जनपद सम्भल उ0 प्र0 में समस्त आर्यसमाजों के तत्वाधान में बाबूराम भायसिंह महाविद्यालय बबराला के प्रांगण में विशाल आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन प्रतिदिन 5.30 से 7.30 बजे तक पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के तत्वाधान के योग चिकित्सा व ध्यान योग शिविर का आयोजन रखा गया जो पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। 16 नवम्बर को सभी आर्यजनों ने जन-जागृति के लिए विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया। नगर कीर्तन के रूप में शोभायात्रा का व्यापक प्रभाव पड़ा। भजनोपदेशकों ने पूरी यात्रा में महर्षि दयानन्द की महिमा तथा राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत भजन गाये गये। ग्राम्य क्षेत्रों से आये आर्यों और विद्यालयों के छात्रों का उत्साह देखते ही बनता था। श्री वेदवसु आर्य ने पूरी यात्रा का कुशलतापूर्वक संचालन किया। प्रधान आर्यसमाज श्री नवनीत यादव अपने सभी कार्यकर्त्ताओं के साथ सारी यात्रा में प्रबन्ध का दायित्व संभाले रहे। जिला प्रशासन का भी पूरे कार्यक्रम में पूरा सहयोग रहा इसके लिए जनपद अधिकारियों व जिलाधिकारी महोदय की जितनी प्रशंसा की जाय न्यून है।

16 नवम्बर 2019 से इस त्रिदिवसीय आर्य महासम्मेलन आर्ष गुरुकुल वेदमन्दिर मथुरा के अधिष्ठाता व संचालक आचार्य स्वदेश जी यज्ञ के ब्रह्मा एवं पूरे कार्यक्रम के प्रेरणास्रोत के रूप में उपस्थित रहे। गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के ब्रह्मचारियों ने यज्ञ कराया। आर्य उपदेशक पं0 शिवकुमार शास्त्री सहारनपुर, श्री राकेशकुमार आर्य, आचार्य जीवनसिंह, आर्यवीर दल के प्रान्तीय संचालक श्री पंकज आर्य तथा भजनोपदेशकों में श्री रामनिवास आर्य पानीपत , श्री शंकरसिंह आर्य एटा तथा ब्रह्मचारी राष्ट्रवसु आर्य गुरुकुल मथुरा ने अपने भजनों के माध्यम से पवित्र वेदों का सन्देश दिया। महासम्मेलन के मुख्य सूत्रधार श्री नवनीतकुमार, श्री दयाशंकर आर्य, श्री राजेन्द्रप्रसाद आर्य, श्री रामवीर आर्य, डॉ0 ओ. पी. वर्मा, श्री यशपाल शास्त्री, श्री तिलकसिंह आदि रहे।

राव हरिश्चन्द्र का निधन

आर्यजगत् के भामाशाह महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, प्रखर राष्ट्रभक्त, आस्था की प्रतिमूर्ति प्रबल ईश्वर विश्वासी, विनम्रता व सुशीलता जिनका भूषण रही ऐसे स्वनामधन्य आदरणीय राव हरिश्चन्द्र जी का निधन नागपुर में 24 दिसम्बर को हो गया। 25 दिसम्बर को ग्राम विगोपुर जनपद नारनौल प्रान्त हरियाणा में उनका अन्तिम संस्कार वैदिक विद्वानों के द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। आर्ष गुरुकुल वेदमन्दिर मथुरा में उनके निधन पर शोक व्यक्त किया उनके द्वारा किये उपकारों का स्मरण किया। दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि दी गयी तथा शोक सन्तप्त परिवार के प्रति सहानुभूति प्रगट करते हुए प्रभु से प्रार्थना की गयी कि प्रभु शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

इस वेद पारायण यज्ञ में निरन्तर जिन उपदेशकों ने अपने भजनों के द्वारा सन्देश दिया उनमें कुंवर उदयवीरसिंह जी उसपार (मथुरा), श्री देवमुनि जी अकबरपुर (मथुरा), हरवीर जी बरेली, लाखनसिंह जी माल (मथुरा), श्री महाशय बाबूलाल जी आर्य, धर्मवीर जी धौलपुर, बहिन कुसुमलता जी मथुरा इत्यादि रहे। जिन्होंने समय–समय पर महर्षि महिमा और आर्य संस्कृति के द्योतक गीतों द्वारा श्रद्धालु जनता का मार्गदर्शन किया। मुम्बई से श्री वीरेन्द्र गांधी व उनकी बहिन अनीता आर्या ने भी कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया।

पूर्ण आहुति के दिन श्रद्धालु जनता का उत्साह चरम पर था। भयंकर शीतलहर भी उनके उत्साह को कम न कर पाई। भारी संख्या में यज्ञप्रेमी जनता का प्रवाह निरन्तर 3 घंटे तक चलता रहा। यज्ञ के प्रमुख यजमान श्री कृष्णवीरजी शर्मा एवं उनकी धर्मपत्नी सरोज शर्मा ने सभी विद्वानों, उपदेशकों, संन्यासियों, वेदपाठी, ब्रह्मचारियों को वस्त्र व मुद्रा के रूप में दक्षिणा देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के ब्रह्मचारियों को उनकी सेवा साधना कर्त्तव्यनिष्ठा, अनुशासनप्रियता आदि को दृष्टि में रखकर प्रशस्ति पत्र देकर पुरोत्साहन दिया गया। जिन ब्रह्मचारियों ने अपनी कक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया उन्हें भी प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

आर्यवीर दल के प्रान्तीय संचालक का कार्यभार पंकज आर्य को सार्वदेशिक आर्यवीर दल के पदाधिकारी श्री हरीसिंह आर्य और श्री समरसिंह आर्य ने सौंपा और पश्चिमी उत्तरप्रदेश का श्री ज्ञानेन्द्र गांधी जी को सौंपा, पूर्वी उत्तर प्रदेश का श्री प्रमोदकुमार जी को सौंपा, आगरा कमिश्नरी का कार्यभार सत्यप्रिय आर्य को सौंपा, मथुरा का विवेकप्रिय आर्य को सौंपा गया। संगठन मंत्री का पद पं. विपिनबिहारी आर्य एवं श्री कृष्णकुमार आर्य को सौंपा इस अवसर पर प्रान्तीय संचालन श्री पंकज जी आर्य ने आर्यवीर दल की कार्य योजना का विस्तार से उल्लेख किया और लोगों को इस योजना से अपने बच्चों को जोड़ने का आह्वान किया। पूरे कार्यक्रम में व्यवस्था का दायित्व ब्रह्मचारियों ने पूर्णनिष्ठा के साथ सम्भाला। श्री विरजानन्द ट्रस्ट के पदाधिकारियों का सर्वात्मना सहयोग रहा। व्यवस्था में भानुप्रताप मलिक, संतोषकुमार आर्य, योगेश यादव, राममुनि वानप्रस्थ आदि ने पूर्ण तन्मयता के साथ अपना योगदान दिया। अन्त में श्रद्धालुओं से उनकी लग्ननिष्ठा की सराहना करते हुए निरन्तर इस भावना को बनाये रखने के लिए कहा गया। वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिए अपने जीवन के अमूल्य समय में से कुछ समय निकालने का भी अनुरोध किया गया। ईश्वरभक्ति, राष्ट्रभक्ति दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। बिना ईश्वरभक्ति के राष्ट्रभक्ति संभव नहीं है। राष्ट्रभक्ति के बिना ईश्वरभक्ति के अनुकूल वातावरण बनाना असम्भव है। अतः इन दोनों की प्रबल भावना से ही आनन्दमय संसार का निर्माण होता है और मनुष्य मानवदेह धारण करके धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को प्राप्त करता है।

अतः इन सब दायित्वों का निर्वहन करना हम सबका कर्तव्य बनता है, महर्षि दयानन्द के उद्देश्य में सम्पूर्ण संसार का उपकार करना शामिल था। अतः यह परिपक्व चिंतन ही व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के उद्धार का मार्ग प्रशस्त करता है। हम सब स्वयं इस पथ पर आयें और लोगों को भी प्रयत्नपूर्वक कल्याणकारी पथ पर लायें। निष्ठावान कार्यकर्ताओं के द्वारा ही सब कार्य सफल होते हैं। इस कार्यक्रम को भी निष्ठावान कार्यकर्ताओं की मेहनत ने सफल किया, इसलिए सभी कार्यकर्ताओं के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए साधुवाद देता हूँ। ❋

सत्य प्रकाशन मथुरा के अनमोल प्रकाशन

शुद्ध रामायण (सजिल्द)	220.00	भ्रांति दर्शन	20.00	गायत्री गौरव	5.00
शुद्ध रामायण (अजिल्द)	170.00	शान्ता	20.00	महर्षि दयानन्द की मान्यतायें	5.00
शंकर सर्वस्व	120.00	संध्या रहस्य	20.00	सफल व्यक्तित्व	5.00
मानस पीयूष (रामचरित मानस)	100.00	गीता तत्व दर्शन	20.00	जीजा साले की बातें	5.00
शुद्ध कृष्णायण	80.00	गृहस्थ जीवन रहस्य	20.00	विषपान और अमृत दान	5.00
शुद्ध हनुमच्चरित	60.00	श्रीमद् भगवत गीता	20.00	पंचाग के गुलाम	5.00
नित्य कर्म विधि	45.00	आर्यों की दिनचर्या	20.00	सर्वश्रेष्ठ कहानियां (प्रेस में)	
विदुर नीति	40.00	दयानन्द और विवेकानन्द	15.00	नमस्ते ही क्यों	10.00
वैदिक स्वर्ग की झांकियाँ	40.00	इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ	12.00	महिला गीतांजलि	15.00
चाणक्य नीति	40.00	बाल मनुस्मृति	12.00	पुराणों के कृष्ण	12.00
महाभारत के प्रेरक प्रसंग	40.00	ओंकार उपासना	12.00	भागवत के नमकीन चुटकुले	8.00
दो मित्रों की बातें	35.00	शुद्ध सत्यनारायण कथा	15.00	आदर्श पत्नी	10.00
वेद प्रभा	30.00	दादी पोती की बातें	10.00	मानव तू मानव बन	8.00
शान्ति कथा	30.00	दण्डी जी का जीवन पथ	10.00	ऋषि गाथा	4.00
भारत और मूर्ति पूजा	30.00	क्या भूत होते हैं (प्रेस में)		सर्प विष उपचार	4.00
यज्ञमय जीवन	30.00	महाभारत के कृष्ण	15.00	चूहे की कहानी	4.00
दो बहिनों की बातें	30.00	ब्रजभूमि और कृष्ण	8.00	उपासना के लाभ	4.00
संगीत रत्नाकर प्रथम भाग	25.00	सच्चे गुच्छे	8.00	भगवान के एजेन्ट (प्रेस में)	
चार मित्रों की बातें	20.00	मृतक भोज और श्राद्ध तर्पण	8.00	दयानन्द की दया	3.00
भारतीय संस्कृति के तीन प्रतीक	20.00	वृक्षों में जीव है या नहीं	5.00	शंकराचार्य और मूर्ति पूजा	3.00
मील का पत्थर	20.00			शांति पथ	2.00

आवश्यक सूचना

1. पाठकगण वर्ष 2020 के लिये वार्षिक शुल्क 150/– रूपये अविलम्ब भिजवायें तथा पन्द्रह वर्ष की सदस्यता हेतु 1500/– भिजवायें।
2. पत्रिका भेजने की तारीख प्रतिमाह 7 व 14 है, कृपया ध्यान रखें।

बुक–पोस्ट
छपी पुस्तक/पुस्तिका

सेवा में,

....

....

....

....

.... पिन कोड ....

पत्र व्यवहार का पता :–
व्यवस्थापक – कन्हैयालाल आर्य
सत्य प्रकाशन
डाकघर– गायत्री तपोभूमि, वृन्दावन मार्ग
(आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग), मसानी चौराहे के पास,
मथुरा (उ० प्र०) 281003
फोन (0565) 2406431
मोबा. 9759804182

मुद्रक : स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक आचार्य स्वदेश के लिए मित्तल कम्प्यूटर प्रिंटर्स, वृन्दावन रोड, मथुरा में छपकर सत्य प्रकाशन मथुरा से प्रकाशित

Yogendra # 9927136600